—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक

अक्टूबर, 2007 वर्ष 6 अंक 08

मुअ़जिज़ा

गर्चे वां पानी नहीं था इक गिलास
चौदा सौ को लग गई थी वां प्यास
हाथ पानी में जो डाला आप ने
पी लिया फिर चौदा सौ अस्हाब ने
और वुज़ू भी सब ने उस से कर लिया
ये तो था प्यारे नबी का मुअ़जिज़ा
अस्सलाम हम सब के आक़ा अस्सलाम
अस्सलाम हम सब के मौला अस्सलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐ शिक्षक तथा शिक्षार्थी	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
❐ फिरिश्तों पर बिछाते है	शमीम	6
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
❐ भारत का संक्षिप्त इतिहास	सय्यिद अबूजफर नदवी	9
❐ इस्लाम और साइंस	उबैदुर्रहमान नदवी	12
❐ मदारिस का किरदार	बिलाल हसनी नदवी	14
❐ कैसे थे पहले के लोग	अबू मतलूब	16
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	17
❐ अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस	एम हसन अंसारी	19
❐ मौलाना अब्दुल करीम पारिख	एम हसन अंसारी	20
❐ हिन्दी साहित्य के अदब पारे	एम हसन अंसारी	22
❐ भारतीय इतिहास	प्रो. श्री नेत्र पाण्डेय	23
❐ बन्दों के हुकूक	इरफान फारूकी नदवी	25
❐ हमारे हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अखलाक	सै० सुलेमान नदवी	27
❐ बच्चों की दावत से वह मुसलमान बन गया	अकीदतुल्लाह कासिमी	32
❐ उम्मत का क्या हाल है?		34
❐ एक खत		35
❐ सेक्स एजूकेशन	एम०एच० खां	36
❐ गुर्दे की पथरी	इदारा	37
❐ उर्दू और गांधी जी	इदारा	39
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

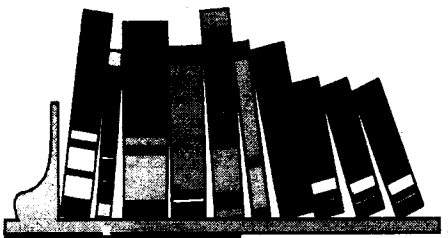

शिक्षक तथा शिक्षार्थी

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

शिक्षा की अनगिनत प्रकार हैं, उसी के अनुसार शिक्षक तथा शिक्षार्थी के प्रकार भी अनेक हैं। एक साधू अपने चेले को साधना की शिक्षा देता है, एक कृषक अपने बेटे को कृषि के गुण सिखाता है, एक लोहार, एक बढ़ई, एक कुम्हार, एक सुनार, साधारणतया अपनी अपनी सन्तानों को अपनी कला से अवगत कराते हैं, यह सत्य है कि अब आईटीआई संस्थाओं में यह सब सिखाया जाने लगा है, मगर याद रहे उस्तानी बिल्ली ने शेर को पेड़ पर चढ़ना नहीं सिखाया था, तो जो गुरू बाप बेटे को सिखाता है वह स्कूल टीचर अपने शागिर्द को नहीं बताता, ग़रज़ कि उस्तादी शागिर्दी के प्रकारों का अहाता करना सरल नहीं उन में कुछ मानव जीवन को कष्ट पहुंचाने वाले भी हैं । जैसे चोरी, पाकिट मारी, डकैती, सेंध लगाना आदि जो सब के निकट अवैध हैं फिर भी इन व्यवसायों में भी शिक्षार्थी अपने शिक्षक का आदर सम्मान करता है, परन्तु इस पर मुझे एक घटना याद आ गई वह यह कि एक बालक कोई चोरी कर लाया, मां को बताया, मां खुश हुई, बच्चे को साहस मिला यहां तक कि वह चोरी में माहिर हुआ, फिर डकैती और क़त्ल भी करने लगा, खुदा की पकड़ से कहां बच सकेगा, दुन्या में भी पकड़ा गया, फांसी की सज़ा हुई, आख़िर वक़्त उस की ख्वाहिश मालूम की गई, तो उस ने कहा मैं अपनी मां के कान में कुछ कहना चाहता हूं। मां बुलाई गई उसने अपने कान फांसी पाने वाले बेटे के मुंह से लगा दिये, बेटे ने अपने दांतों से मां के कान काट लिये, वह चिल्ला पड़ी, लोगों ने कहा ऐसे बेटे को तो फांसी ही मिलना चाहिए मगर बेटा बोला आज मुझे फांसी अपनी शिक्षिका मां के कारण ही मिल रही है, अगर यह मेरी पहली चोरी पर ख़ुश न होती और मुझे चोरी न करने की शिक्षा देती तो आज मुझे यह दिन न देखना पड़ता?

कहना यह है कि शिक्षक तथा शिक्षार्थी की इतनी भांतें हैं कि उनकी गिनती असम्भव है परन्तु यहां हम उस शिक्षक तथा शिक्षार्थी, अध्यापक तथा विद्यार्थी, गुरू तथा शिष्ट, उस्ताद तथा शागिर्द का वर्णन करना चाहते हैं जो स्कूलों और कालेजों में नाम लिखा कर एक पाठ्यक्रम को पूरा करके उस की परीक्षा पास करते हैं या मक्तबों, मदरसों या किसी दारूल उलूम में नाम लिखा कर वहां का निसाब पूरा कर के सनद के मुस्तहिक़ होते हैं। आज हम उनके पारस्परिक सम्बन्ध उन की शिक्षा तथा शिक्षण एवं उनके परिणामों पर कुछ चर्चा करना चाहते हैं।

पारस्परिक सम्बन्ध :

किसी हिन्दू संत का कहना है :

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, के के लागों पाएं
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताए

गुरू तथा विष्णू भगवान कृष्ण गोविन्द महाराज दोनों समान रूप में खड़े हैं समझ में नही आता कि किस के पैरों पर सर धरूं परन्तु निक्षावर हो जाऊं अपने गुरू पर कि उन्होंने गोविन्द जी का परिचय दे दिया। पहले की उम्मतों तथा पुरातन धर्मों में किसी के सम्मान में उस के आगे झुकना या पैरों पर सर रख देना वर्जित न था इस लिए सूर दास जी ने कहा कि किस के कदमों

पर सर धरूं लेकिन अंतिम सत्य धर्म इस्लाम ने ईश्वर के अतिरिक्त किसी के आगे झुकना वर्जित ठहराया। इसी प्रकार हिन्दू धर्म वालों का मानना है कि आवश्यकता पर ईश्वर स्वयं जन्म लेता है अतएव गोविन्द को भगवान माना है जो इस्लाम के निकट मिथ्या विश्वास है। परन्तु इस पद्य में गुरू का उच्च स्तर प्रकट किया गया है। इस के विरूद्ध मुस्लिम बुजुर्ग ने कहा : जिस ने मुझे ज्ञान का एक अक्षर सिखाया मैं उसका हो गया, वह चाहे मुझे बेच दे चाहे स्वतंत्र रखते अपनी सेवा में रखे चाहे स्वतंत्र कर दे। इस कथन में ऐकेश्वरवाद का पूरा ध्यान रखा गया है, तथा एकेश्वर के अतिरिक्त किसी के समक्ष नतमस्तक होने की इच्छा नहीं की गयी है, परन्तु उस्ताद का भरपूर आदर व सम्मान है। अतः शिष्यों पर अनिवार्य है कि वह अपने गुरू जनों के आदर में कोई कमी न करें और गुरूजनों का कर्तव्य है कि वह अपने शिष्यों को अपने बेटे के समान समझते हुए उन्हें शिक्षित बनाएं।

शिक्षा तथा शिक्षण

शिक्षक का कर्तव्य है कि वह अपने शिष्यों को लाभदायक ही शिक्षा दे, अब लाभदायक की कसौटियां अलग अलग हैं इस्लाम में लाभदायक ज्ञान वही है जो इस जगत में सुख दे तथा पर लोक के जीवन को बिगाड़े नहीं अपितु वहां काम आए ऐसे ज्ञान का परिचय केवल उलमा (इस्लामिक आचार्य) ही दे सकते हैं। रही बात शिक्षण की तो उसे अनुभवियों से सीख कर अच्छे से अच्छे ढंग से लाभ पहुंचाना चाहिए।

परिणाम :

शिक्षा का परिणाम विधाता को पहचनना है फिर मानव के जीवन को सभ्य बनाना है जिस मनुष्य में सभ्यता नहीं वह पशु से भी हीन है, यह सभ्यता दो प्रकार से आती है, पहली बात तो यह कि शिक्षक शिक्षा देते समय इस बात को उजागर करता रहे दूसरे यह कि विद्यार्थी स्वयं सभ्य बनने का इरादा करे। इस्लामिक दृष्टि से यदि मनुष्य अगले जीवन को भूल गया और इस्लामी विधि द्वारा अगला जीवन बनाने की चेष्टा न की तो वह पाषाण से भी हीनि है। कुछ कार्य ऐसे हैं जो उच्च शिक्षा वालों के निकट भी सभ्यता के विरूद्ध नहीं जैसे खड़े होकर पेशाब करना, जहां बस खड़ी हुई लोग एक लाइन से खड़े होकर मूतने लगते हैं, स्पष्ट है जब पाखाना के लिए आड़ चाहिए तो पेशाब करते समय आड़ क्यों न चाहिए और दूसरे के समक्ष अपना मूत्र यंत्र (लिंग) खोल देना कहां की सभ्यता है, कुछ हो इस्लाम इसे अवैध ठहराता है, सिवाय इस के कि कोई मजबूरी या शरअ़ी ज़रूरत हो। अतः चाहिए कि ऐसे कपड़े न पहने जिसमें खड़े होकर पेशाब करना पड़े और किसी के सामने अपना मूत्र यंत्र या गुदा कदापि न खोलें। जिन लोगों ने इसे सभ्यता के विरूद्ध न जाना वही तो हैं जो सेकस शिक्षा के लिए बेचैन है वह छोटे बच्चों को भी सेक्स मैदान में उतार करा गुदा मैथुन तथा व्यभिचार को आम कर देना चाहते हैं। इस्लाम इस की कदापि अनुमति नहीं देता। इस्लाम तो यहां तक सिखाता है कि अध्यापक अपने शिष्य को अपने पुत्र समान जाने परन्तु उससे एकान्त के सम्बन्ध से दूर ही रहे, ऐसा न हो कि शैताना गुदा मैथुन पर उभार दे।

मुफ़स्सिरे क़ुर्आन मौलाना अ़ब्दुल करीम पारीख से मेरा गहरा सम्बन्ध था ११–१२ सितम्बर २००७ की बीच की पिछली रात में उनके निधन की सूचना पर अत्यन्त दुखी हूं। उन के लिए मग़फ़िरत तथा अपने और उनके परिवार के लोगों के लिये सब्र की दुआ़ करते हुए इस क़ुर्आनिक सत्य को दोहराता हूं : "निस्संदेह हम सब अल्लाह ही के हैं, और हम सब उसी की ओर लौटने वाले हैं।"

कुरआन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

नबी की हैसियत और नबुव्वत का मकाम कुरआने मजीद जिस तरह नबियें पर ईमान लाने और उनकी इताअत व पैरवी करने की दावत देता है, इसी तरह वह इस पर भी जोर देता है कि उन की हैसियत व मकाम और उनके काम को सही तौर पर जाना जाये, और उनकी शान में कमी–बेशी से बचें।

नबियों की शान में कोताही और बेअदबी की गुमराही

नबियों की शान में सब से बड़ी बेअदबी यह है कि उनकी पैगम्बराना हैसियत का इन्कार किया जाये और उन को झुटलाया जाये। और जो हिदायत व तालीम और जो हुक्म वे खुदा की तरफ से लाये हैं उनको स्वीकार ही न किया जाये। कुरआन कहता है कि यह भी उसी तरह कुफ्र है जिस तरह कि खुदा का इन्कार कुफ्र है। और खुदा के मुनकिरों की तरह इस जुर्म को करने वाले भी अल्लाह की मगफिरत और बखशिश से बिल्कुल महरूम (वंचित) रहने वाले हैं। "ऐसे लोगो के बारे में कुरआने मजीद का एलान। पहले गुजर चुका है, जिस का मतलब यही है कि ऐसे लोग बिलकुल काफिर हैं और जहन्नम का दर्दनाक अजाब उन के लिए तैयार है।"(अन्निसा : १५१)

और सूरए–अअराफ में जिक्र किया गया है कि आदम (अ०) व हव्वा के इस दुन्या में आने के बाद जब इन्सानी तारीख (इतिहास) का यहां आगाज हुआ तो उस समय आदम (अ०) की पूरी नस्ल के लिए चंद उसूली और बुन्यादी हिदायतें अल्लाह तआला की ओर से दी गयी थीं उन में से एक यह भी थी कि – तर्जमाः ऐ आदम की औलाद! अगर तुम्हारे पास हमारे भेजे गये पैगम्बर आयें जो तुम ही में से होंगे और तुम को मेरे अहकाम (हुक्म) बतायेंगे, तो जो लोग (इन की हिदायत को कबूल करके) परहेजगारी इख्तियार करेंगे और अपने अहवाल व आमाल को ठीक कर लेंगे तो उन को कोई खौफ न होगा और न वे गमगीन होंगे। और जो लोग इन्कार और इसतिकबार (घमण्ड–अहंकार) की राह इख्तियार करेंगे और हमारे अहकाम को झुटलायेंगे और तकब्बुर (घमण्ड–अहंकार) की वजह से उन को कबूल नहीं करेंगे वे दोजख वाले होंगे और हमेशा दोजख में ही पड़े रहेंगे। (अअराफ : ३५)

और चन्द ही आयात के बाद नबियों और उन की लायी हुयी तालीम को झुटलाने वालों और उन का इन्कार करने वालों के बारे में फिर फर्माया गया है :

तर्जमा : जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और तकब्बुर की वजह से उन के मानने से इन्कार किया, उनके लिए आसमान के दरवाजे नहीं खोले जायेंगे और वे कभी जन्नत में न जा सकेंगे, यहां तक कि ऊंट सूई के नाके में दाखिल हो जाये (मतलब) यह है कि जिस तरह सूई के नाके में ऊंट का गुजरना ना मुम्किन है इसी तरह अल्लाह की आयतों को झुटलाने वालों और इन्कार करने वालों का जन्नत में जाना ना मुम्किन है। (अअराफ : ४०)

और जो लोग नबियों पर ईमान लायें और उन की हिदायत व तालीम की पैरवी करके नेक अमल वाली जिन्दगी गुजारें, उन के बारे में, ऊपर की आयत से लगी आयत में फरमाया गया है :–

तर्जमा : और जो लोग ईमान लायें और अच्छे अमल करें (यानी इल्म व अमल में नबियों की तालीम व हिदायत की पैरवी करें – और यह कोई नामुम्किन या बहुत मुश्किल नहीं क्योंकि) हम किसी को उस के इमकान और उसकी ताकत व वुसअत के सिवा मुकल्लफ नहीं करते तो वे जन्नती हैं जो हमेशा हमेशा जन्नत में रहेंगे। (अल अअराफ : ४२)

फिर फरमाया गया है कि नबियों पर ईमान लाने और उनकी पैरवी करने की वजह से, जब ये खुदा के बन्दे जन्नत में पहुंच जायेंगे तो उन की जबानों पर अल्लाह की हम्द व सना और पैगम्बरों के एतिराफ व शुक्रिये का यह नमूना होगा : –

तर्जुमा : अल्लाह का (लाख–लाख) शुक्र है जिस ने हम को अपने फज्ल से इस मकाम तक पहुंचाया और अगर वह न पहुंचता तो यहां तक हमारी हरगिज पहुंच नहीं हो सकती थी, बेशक हमारे

अल्लाह के पैगम्बरों की तालीम व दावत बिलकुल हक थी और उन्होंने जो कुछ हम को बताया सब सच था। (अल अअराफ : ४३)

अलगरज कुरआने – मजीद ने इन आयतों में बतलाया कि नबियों को झुटलाना और उनकी तालीम का इन्कार अल्लाह के नजदीक मुआफ न होने वाला जुर्म (अपराध) है। और जिस तरह खुदा के इन्कार की सजा जहन्नम का हमेशा का अजाब है इसी तरह पैगम्बरों को झुटलाने की सजा भी अल्लाह ने यही मुकर्रर की है। यह लोग कभी जन्नत की हवा भी ना पा सकेंगे – जन्नत सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए है नबियों पर ईमान लायें, और उनकी तालीम व हिदायत की रौशनी में अपननी जिन्दगियों को संवारें। कुरआने–मजीद ने अल्लाह तआला के इसी फैसले का एलान एक दूसरी जगह इन शब्दों में किया है :–

तर्जमा : हम पैगम्बरों को सिर्फ इसी लिये भेजते हैं कि वे सवाब की खुशखबरी सुनायें और अजाब से डरायें, पस जो लोग उन की दावत को कबूल करके ईमान लायें और उनकी तालीम व हिदायत के मुताबिक अपने को दुरूस्त कर लें तो उन को कोई खौफ और कोई गम नहीं। और बरखिलाफ (विपरीत) इस के जो लोग हमारी आयतों को झुटलायेंगे वे अपनी बदकारी और नाफरमानी की वजह से, जरूर अजाब में मुब्तला होंगे। (अनआम : ४८)

इस एलान और तंबीह के अलावा कुरआने मजीद अपने मुखातिबीन को यह भी बतलाता है कि पिछले जमानों में जिन कौमों और कौमों के जिन सरदारों ने अल्लाह के पैगम्बरों की मुखालिफत (विरोध) की और उन को झुटलाया, उनको कभी मुआफ नहीं किया गया। चुनांचि सूरए–सॉद में कौम–नूह, कौमे–आद, कौमे–समूद, कौमे– शुअैब और फिरऔन का नाम बनाम जिक्र करके उन के जुर्म और उस की सजा का जिक्र इन शब्दों में किया गया है :–

तर्जमा : उन सब ने यही किया कि मेरे पैगम्बरों को झुटलाया और उनका इन्कार किया, इस तरह मेरा अजाब उन पर वाके (घटित) हुआ। (सादः१४)

फ़िरिश्ते पर बिछाते हैं

मिटा दें अपनी हस्ती को
कलामे पाक की ख़ातिर
लगा दें घर गृहस्ती को
कलामे पाक की ख़ातिर
वह ख़ुश क़िस्मत है माल व ज़र
जो क़ुर्आ पर लुटाते हैं
फ़िरिश्ते पर बिछाते हैं
फ़िरिश्ते पर बिछाते हैं
ख़ुदा का है करम उन पर
मेरे आक़ा (सल्ल०) ने फ़रमाया
वह तुम मे सब से बेहतर है
मेरे आक़ा ने फ़रमाया
कलामुल्लाह जो पढ़ते हैं
लोगों को पढ़ाते है
फ़िरिश्ते पर बिछाते हैं
फ़िरिश्ते पर बिछाते हैं
न सोने की न चांदी की
न तख़्त व ताज की ख़्वाहिश
शमीम इस दिल की रहती है
हमेशा एक फरमाईश
मदीने में भी जाऊं जैसे
अकसर लोग जाते हैं
फ़िरिश्ते पर बिछाते हैं
फ़िरिश्ते पर बिछाते हैं

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

घर वालों पर खर्च करने का अज्र सबसे जियादा है :

हजरत अबू हुरैरह (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, एक दीनार तुमने, अल्लाह के रास्ते में खर्च किया। एक दीनार गर्दन आजाद करने में, एक दीनार घर वालों पर खर्च किया। सो जो दीनार घरवालों पर खर्च किया उसका दर्जः सबसे जियादः है। (मुस्लिम)

हजरत सौबान मौला से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अफ्जलतरीन वह दीनार है जिसको आदमी अपने घरवालों पर खर्च करे, और उन जानवरों पर खच्र किया जाये जो अल्लाह के रास्ते में काम आयें और वह दीनार जो अल्लाह के रास्ते में अपने साथियों पर खर्च किया जाये।

औलाद पर खर्च करने का सवाब

हजरत उम्मेसलमः (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह! क्या मेरी वह औलाद जो पहले शौहर से है उन पर खर्च करने में अज्र है। मैं उनको बुरी हालत में छोड़ना नहीं चाहती और वह मेरी ही तो औलाद हैं। आपने फरमाया, हां, जो कुछ भी तुम खर्च करोगे तुम्हें अज्र मिलेगा। (बुखारी मुस्लिम)

बीबी को खिलाने का सवाब

हजरत सअद (र०) बिन अबी वक्कास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह की खुशी चाहते हुए जो कुछ भी खर्च करोगे अल्लाह उसका अज्र देगा चाहे अपनी बीवी के मुंह में एक लुक्मा रक्खो। (बुखारी मुस्लिम)

घरवालों पर सवाब की नीयत से खर्च करना

हजरत अबू मस्ऊद (र०) अल्बदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मर्द अपने घरवालों पर अज्र तलब करते हुए खर्च करे तो यह सदका है। (बुखारी मुस्लिम)

अपने मुतअल्लिकीन की मदद न करना बड़ा गुनाह है

हजरत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र बिन अलआस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, इन्सान का गुनाह यही काफी है कि जिसका कफील हो उसकी किफालत से हाथ उठा ले। (अबूदावूद मुस्लिम)

खर्च करने वाले के लिए निअमल–बदल की दुआ

अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया, हर रोज दो फिरिश्ते उतरते है। एक कहता है ऐ अल्लाह ! खर्च करने वाले को निअमल बदल अता फरमा। दूसरा कहता है ऐ अल्लाह! बखीलों को नुकसान और तबाही दे। (बुखारी मुस्लिम)

मुतअल्लिकीन से इब्तिदा

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया, ऊंचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है। और खर्च की इब्तिदा उन लोगों से करो जिनकी तुम परवरिश करते हो और बेहतरीन सदका वह है जो कुछ दौलत बचाकर किया जाये। और जो मुहतात रहना चाहेगा अल्लाह उसको मुहतात रक्खेगा। जो इस्तिगना चाहेगा अल्लाह उसको गनी करेगा। (बुखारी)

ऐ ईमानवालो! उन पाक चीजो को खर्च करो जो तुमने कमाई और जो हमने तुम्हारे लिए जमीन से निकाली हैं। खास तौर से खराब ही चीज न खर्च करो।

एक सहाबी का सबसे जियादा पसन्दीदह माल राहे खुदा में देना

हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि अन्सार में अबू तलहः (र०) सबसे जियादः मालदार थे और उनके माल में उनको बैरुहा (बाग का नाम) बहुत पसन्द था और वह मस्जिद के सामने था। रसूलुल्लल्लाह अलैहि वसल्लम अक्सर उसमें तशरीफ ले जाते और उसका पानी पीते जो बहुत शीरीं था। हजरत अनस (र०) कहते हैं कि जब यह आयत उतरी लनतनालुल्बिर्र हत्ता तुन्फिकू मिम्मा तुहिब्बून तो हजरत अबू तलहा (र०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आये और कहा या रसूलुल्लाह । आप पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी है। लनतनालुल्बिर्र हता तुन्फिकू

मिम्मा तुहिब्बून। और मुझे अपने माल बैरूहा बहुत मर्गूब है। मैं उसको अल्लाह के लिए सदका करता हूं और उसके जखीरा और नेकी की उम्मीद अल्लाह से रखता। पस आप उसको जहां अल्लाह का हुक्म हो वक्फ कर दीजिए। आपने फरमाया, ओहो यह माल तो बहुत नफे का है। यह माल तो बहुत नफा का है। जो तुमने कहा मैंने सुना, मेरी राय यह है कि इसको अपने करावतदारों के लिए वक्फ कर दो। हजरत अबू तलहः (रजि०) ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह जो आपकी मर्जी हो। फिर उसको हजरत अबू तलहः (रजि०) ने अपने चचाजाद भाइयों में तकसीम कर दिया। (बुखारी मुस्लिम)

छोटे बच्चे की निगरानी औ इहतियात

हजरत अबू हुरैरः (रजि०) से रिवायत है कि हसन (र०) बिन अली (र०) ने एक खजूर उठा लिया और अपने मुंह में रख लिया, आपने फरमाया अरे अरे इसको फेंको, क्या तुम नहीं जानते कि सदकः का माल हम नहीं खाते। (बुखारी–मुस्लिम)

और एक रिवायत में है, आपने फरमाया सदका हमारे लिए जाईज नहीं।

बच्चे को तरबियत और आदाब की तालीम

हजरत उमर (र०) बिन अबू सलमः (र०) से (जो उम्मे सलमः के साहबजादे थे और आं हजरत (सल्ल०) की परवरिश में थे) रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु व सल्लम की परवरिश में था और प्याले में इधर–उधर से खाया करता था। आपने मुझसे फरमाया ऐ लड़के, अल्लाह का नाम लेकर सीधे हाथ से खा और अपने सामने से खा। उसके बाद मैं उसी तरह खाने लगा। (बुखारी मुस्लिम)

हर शख्स अपने मुतअल्लिकीन का जिम्मेदार है और खुदा के सामने जवाबदेह है

हजरत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है, फरमाते थे तुम सब अपनी–अपनी जगह पर जिम्मेदार हो। खलीफा जिम्मेदार है, उससे अपनी रईयत के मुतअल्लिक पूछा जायेगा। मर्द अपने घरवालों का जिम्मेदार है, उसके मुतअल्लिक उससे पूछा जायेगा। औरत अपने शौहर के घर की जिम्मेदार है, उसके बारे में पूछी जायेगी। खादिम अपने आका के माल का जिम्मेदार है, उस से उस के बारे में पूछा जायेगा। (बुखारी–मुस्लिम)

बच्चों को नमाज की ताकीद और तम्बीह

हजरत अम्र (र०) बिन शुऐब से रिवायत है, वह अपने बाप से रिवायत करते हैं, वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम ने फरमाया, तुम्हारी औलाद जब सात बरस की हो तो नमाज की ताकीद करो और जब दस बरस की हो तो मार कर नमाज पढ़ाओ और उनके बिस्तर अलग कर दो। (अबू दाऊद)

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब बच्चे सात बरस के हों तो नमाज की ताकीद करो और जब दस बरस के हों तो उनको मार–मार कर नमाज पर लगाओ।

(अबूदाऊद–तिर्मिजी)

हजरत जिबरील की ताकीद

हजरत इब्नि उमर (रजि०) और हजरत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिबरील (अ०) मुझे बराबर हमसाये के बारे में वसिय्यत करते रहे। यहां तक कि मुझे ख्याल हुआ कि कहीं इसको वारिस न बना दें। (बुखारी–मुस्लिम)

सालन जियादा करके पड़ोसी की मदद

हजरत अबू जर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ अबू जर (र०) जब तुम कोई सालन पकाओ तो शोरबा जियादा कर दिया करो और अपने हम साये का ख्याल रक्खो। (मुस्लिम)

और एक रवायत में है कि अबू जर (र०) ने कहा, मेरे महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे वसिय्यत की कि जब मैं कोई सालन पकाऊं तो शोरबा जियादा कर दूं फिर अपने हमसाये के घर की खबर लूं।

ईमान की शर्त

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया खुदा की कसम वह मोमिन नहीं, खुदा की कसम उसमें ईमान नहीं, खुदा की कसम वह साहबे ईमान नहीं। लोगों ने अर्ज किया या रसूलल्लाह कौन? फरमाया जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी महफूज न रहे।

(बुखारी– मुस्लिम)

●●●●●

पांचवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी : खिल्ज तुर्किस्तान में एक कबीले का नाम था। जलालुद्दीन इसी कबीले से था। यह बहुत दिनों से अफगानिस्तान में रह पड़ा था। सुलतान महमूद गजनवी के जमाने में यह लोग सिपाही बनकर शरू शरू में दाखिल हुए। फिर गौरियों के जमाने में उन्होंने बहुत उन्नति की और बड़े बड़े पदों पर आसीन हुए।

मुअजुद्दीन कैकबाद के आखिरी जमाने में उन्हीं लोगों में से फिरोज़ सेना पति और मंत्री हो गया कैकबाद के मरने के बाद सत्रह वर्ष की उम्र में शाही सिंघासन पर बैठा। और अपनी पदवी "जलालुद्दीन" रखी। वह बहुत ही नेक नीयत और दयालु बादशाह था। प्रारम्भ में चन्द बगावतों को दबाने में समय व्यतीत हुआ और मालवा को दोबारा अपने कब्जे में लाया। अपने बेटे अरकुली खां को मुलतान में सरहदी हाकिम नियुक्त किया। १२६१ ई० (६६१ हि०) पंजाब पर फिर मोगलों के हमले शुरू हो गये। इनके मुकाबले के लिए खुद लाहौर पहुंचा और कई बार पराजित करके देश से निकाल दिया। कई हजार कैदी जब उसके सामने पेश किये गये तो उस ने सब को माफ कर के वतन जाने की आज्ञा दे दी। खुंखार मुगलों पर इस दया का यह प्रभाव हुआ कि वह सब मुसलमान हो गये।

यह अपने भतीजे अलाउद्दीन को, जो उस का दामाद भी था, बहुत चाहता था लेकिन अलाउद्दीन अपनी सास मलका जहां की तेज जबानी से बड़ा परेशान रहता। चुनानचि दिल्ली से वह (इलाहाबाद के पास) कड़ा चला गया जहां का शासन उसको सपुर्द हुआ १२६२ ई० (६६२ हि०) में जब मालवा पर बागियों को परास्त करने के लिए दोबारा हमला किया गया तो अलाउद्दीन की सहायता से बहुत से किले फतह हो गये और शान्ति हर तरफ नजर आने लगी। सुल्तान जलालुद्दीन उस की इस बहादुरी से बहुत खुश हुआ। मलिक अलाउद्दीन ने अपने चाचा को प्रसन्न देख कर चन्देरी पर हमला करने की आज्ञा प्राप्त कर ली। इस बहाने से अलाउद्दीन चार हजार निपुण सवार साथ लेकर "कड़े" से दक्षिण की ओर रवाना हुआ।

दक्षिण पर मुसलमानों का यह पहला आक्रमण था। अलाउद्दीान खिलजी जिस कम साजोसामान से थोड़ी सी फौज के साथ साहसी हमला करके सफल हुआ है, वह इतिहास में एक यादगार घटना है। जब नदी, नाले, पहाड़, जंगल और दुश्मनों के देश को पार करता हुआ देवगढ़ पहुंचा तो राजा देव उसे देख कर चकित रहा गया। अलाउद्दीन ने इस थोड़ी सी सेना से राजा को कई बार पराजित किया। अन्त में सुलह की शर्तें तय हुईं और अनगिनत दौलत लेकर कड़ा वापस आया। यह घटना १२६४ ई० (६६४ हि०) की है। इन कुछ महीनों में सुल्तान जलालुद्दीन को इस की बिल्कुल सूचना न मिली। अलाउद्दीन के वापस आने पर जब उस को इस की खबर हुई तो विजय पर बहुत प्रसन्न हुआ और मिलने की इक्षा प्रकट करके अपने पास बुलाया।

अलाउद्दीन ने क्षमा चाही कि दुश्मनों के कहने सुनने से कहीं आप नाखुश न हों। आखिर तसल्ली देने के विचार से जलालुद्दीन खुद कड़े की तरफ उस से मिलने के लिए रवाना हुआ। सल्तनत के अमीरों ने मना किया परन्तु वह न माना। आखिर कड़ा पहुंच कर जब वह अपने प्यारे भतीजे से गले मिल रहा था कि अलाउद्दीन के आदमियों ने उस नेक दिल इंसान को कत्ल कर दिया।

सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी : इस घटना के बाद अलाउद्दीन १२६६ ई० (६६६ हि०) में दिल्ली के सिंघासन पर बैठा और सरदारों की माली पुरस्कार द्वारा अपना लिया जहां और सुल्तान जलालुद्दीन के लड़कों को एक किले में नजर बन्द कर दिया। जब हर तरफ से उसको इतमिनान हो गया तो देश के प्रबन्ध में व्यस्त हुआ। १०६६ ई० (६६७ हि०) में राजा गुजरात का मंत्री माधो, जो राजा से नाराज होकर दिल्ली आया था, दरबार में हाजिर हुआ और गुजरात

फतह करने के लिए उत्साहित किया। सुल्तान अलाउद्दीन ने मलिक नुसरत और अलग़ खां को गुजरात के लिए रवाना कर दिया। इन दोनों ने बीस हजार फौज से गुजरात फतह कर लिया। राजा करन बाघैला भाग कर दकन पहुंचा। अलग़ खां सफल होकर वापस हुआ राजा की रानी कमला देवी और उसकी लड़की देवल देवी भी दिल्ली पहुंच गईं। देवल देवी की शादी शाहजादा खिजिर खां से कर दी गई।

उसी साल मोगलों ने दो लाख फौज के साथ दिल्ली पर हमला किया। अलाउद्दीन को किला बन्द होने की सलाह दी गयी मगर मुगलों के डर से पब्लिक दिल्ली में इतनी संख्या में इकट्ठा हो गई थी कि तिल रखने की जगह न थी। अलाउद्दीन अपनी फौज को लेकर बाहर निकला और बड़ी बहादुरी से लड़कर के मुगलों को ऐसा पराजित किया कि बहुत समय तक उनको हिन्दुस्तान की तरफ आंख उठा कर देखने की हिम्मत न हुई उस का बेहतरीन सेनापति इस लड़ाई में शहीद हो गया। १२९६ ई० (६९६ हि०) में अलमास बेग अलग़ खां को रंधौर फतह करने के लिए भेजा उसी साल फतह हो गया। १३०३ ई० (६०३ हि०) में उसने चित्तौड़ पर हमला कर के उसे फतह कर लिया और राजा माल देव को उस का शासक बनाया। मलिक काफूर जो खंबात के एक बुगदादी व्यापारी से छीन कर दिल्ली लाया गया था और धीरे धीरे उच्च पद पर पहुंच गया था। १३०६ ई० (७०६ हि०) में उसके नेतृत्व में एक बहुत बड़ी सेना अलाउद्दीन ने रवाना की। मालवा से यह फौज दकिन की तरफ एक सैलाब की तरफ बढ़ी और देखते देखते तमाम दकिन पर छा गई। १३१२ ई० (७१२ हि०) तक काफूर ने धूर समुद्र (मैसूर के निकट) पर अपनी विजय का पताका फहराया और एक मस्जिद यादगार के तौर पर बनवाई जो जहांगीर बादशाह के शासन काल तक मौजूद थी। काफूर सारे दकिन को फतह करके बड़ी शान के साथ दिल्ली पहुंचा। अब अलाउद्दीन बूढ़ा हो गया था, उसका स्वास्थ प्रतिदिन गिरने लगा । बीमारी से स्वभाव में अन्तर आ गया। उस की कठोरता बढ़ती गयी। उधर मलिक काफूर ने उस को सब लोगों के खिलाफ कर दिया था यहां तक कि अपने बेटों और बेगमों के खिलाफ भ्रमित करके महल में नजर बन्द कर दिया था। और फिर अपने शत्रु गुजरात के शासक अलग़ खां की भी हत्या कर दी। यद्यपि यह अनपढ़ था लेकिन प्रबन्ध की अच्छी योग्यता थी। उस ने शराब का बेचना हराम करार दिया। रिश्वत की रोक थाम की। अनाज का दाम निश्चित कर के उस को बेहद सस्ता कर दिया उस ने दुष्टता दूर करने के लिए अच्छे अच्छे कानून बनाए और कठोर दण्ड निर्धारित किये। बंगाल से गुजरात तक और पंजाब से दकिन तक उस की सल्तनत फैली थी। इस प्रकार वह पूरे मुल्क का पहला शहंशाह सम्राट था।

सुल्तान कुतुबद्दीन मोबारक शाह : मलिक काफूर ने अलाउद्दीन खिलजी के बाद नाम पात्र उसके छोटे लड़के को सिंघासन पर बैठाया। खिजिर खां और उसके भाई को, जो ग्वालियर के किले में कैद था, अन्धा कर दिया और मुबारक खां की हत्या करने के लिए दो सिपाही भेजे लेकिन अपनी माता के उपायों से वह बच गया और खुद मलिक काफूर मारा गया। मुबारक शाह सुल्तान कुतबुद्दीन के लकब (उपाधि) से दिल्ली का बादशाह हुआ। उस ने बड़े बड़े सरदारों के बजाय साधारण लोगों को बड़े–बड़े पद दिये। उन्हीं में से एक नवमुस्लिम खुसरो खां हसन गुजराती भी था जिसको सेनापति बनाया। दकिन में कुछ लोग बागी हो गये थे उन के दमन के लिए एक भारी फौज के साथ कुतुबुद्दीन दकिन रवाना हुआ। एक बार फिर पूरे दकिन में भूचाल आ गया। हर बागी को कत्ल करता हुआ दिल्ली वापस आया और खुसरो खां को मदरास फतह करने के लिए छोड़ दिया।

खुसरो खां जब दिल्ली आया तो कुतुबुद्दीन को विलासता (ऐश) में डूबा हुआ पाया। खुसरो खां की विजय से कुतुबुद्दीन इतना प्रसन्न हुआ कि सल्तनत का सारा कारोबार सुपुर्द करके खुद सुखविलास में लिप्त हो गया। खुसरो ने इस समय को गनीमत समझा। उस ने अपने सगे सम्बन्धियोंको बड़े–बड़े पद बांटे और चालीस हजार फौज अपनी जाति के लोगों से खड़ी करके खिलजी रवान्दा के तमाम शाहजादों को मौत के घाट उतार दिया। इस से चिन्ता मुक्त होने के बाद खिलजी सरदारों को बड़ी–बड़ी उपाधि, जागीरें और पद देकर अपना समर्थक बना लिया। इन्हीं में से एक योग्य अफसर मुहम्मद जूना तुगलक भी था जो यद्यपि उस समय चुप रहा मगर हर समय अवसर के इन्तजार में रहा और वक्त मिलते ही अपने बाप मलिक तुगलक के पास पहुंच गया जो सरहदी प्रान्त का हाकिम था। वह बेटे को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ

और सिन्ध और पंजाब की थोड़ी मगर निपुण फौज लेकर दिल्ली की तरफ बढ़ा। खुसरो खां गुजराती जो पटन का रहने वाला था और जाति का ''भरवाड़'' (गड़ेरिया) था, अपने जाति की फौज को लेकर मुकाबले के लिए दिल्ली से बाहर निकला। एक ही लड़ाई में खुसरो खां पराजित हो गया। मलिक तुगलक सफलता के साथ दिल्ली में दाखिल हुआ। खुसरो खां गिरफतार होकर मारा गया और खिल्जी खानदान का वारिस न रहने के कारण तुगलक दिल्ली का बादशाह बन गया।

खिल्जी खानदान ने लगभग चालीस वर्ष हुकूमत की अब तक मुसलमानों की सल्तनत जो केवल उत्तरी भारत में थी इन लोगों ने समुद्र तट तक पहुंचा दिया। गुजरात और दकिन का इलाका फतह किया और दकिन और तिलंगाना के राजाओं को अपना मातहत बनाया। अलाउद्दीन सही तौर पर हिन्दुस्तान का शहंशाह (सम्राट) था। अशोक के बाद से फिर किसी को ऐसी हुकूमत न मिली थी। मुगलों के हमले अभी तक जारी थे। खिल्जी बादशाह उन से बड़ी बहादुरी से लड़ते रहे। फौजी शक्ति बहुत ही उत्तम थी। अलख खां, जफर खां, अलप खां तुगलक बड़े अनुभवी सेनापतियों की बदौलत हर जगह बड़ी सफलता मिलती रही। दरबार का रंगढंग वही तुर्कों जैसा रहा। अलाउद्दीन खिल्जी के जमाने में विदेशी राजदूत बारबार आए और गये। उस काल में भी राजनीतिक मामलों में औरतों का बड़ा प्रभाव था। चुनानचि मलका जहां ही की सलाह से गुजरात का इलाका हिन्दुस्तान में शामिल किया गया।

व्यापार को इस जमाने में तुर्कों के समय से अधिक उन्नति हुई। विदेशी व्यापारी बिहार और बंगाल तक जाते। गुजरात और दक्षिण के बन्दरगाहों से रूई, चमड़ा, मलमल हथियार, गेंडे की ढाल और मसाले की निकासी होती थी सोना, चांदी, घोड़ा आदि बाहर से आते थे। बादशाह चीजों के सस्ते होने पर खास ध्यान रखता था। बाजार भाव का खास विभाग था। अलाउद्दीन के काल में जैसी सस्ती थी हिन्दुस्तान भर में फिर कभी नहीं हुई। उस जमाने में बहुत अधिक इमारतें बनी खासतौर पर मस्जिदें, मकबरे, सरायें, खानकाहें देश के हर कोने में तैयार हुई। गुजरात पटन में अलप खां की मस्जिद इस कारी गरी से बनी कि हर महीने का चांद आखिरी तारीख को उसके बुरूज से नजर आ जाता था। पाक पटन और दिल्ली में हजरत फरीद शकरगंज रह० और हजरत निजामुद्दीन रह० की खानकाह बड़ी आबाद थी। सूफियों द्वारा इस्लाम प्रसार में उन्नति हो रही थी।

बहुत से मदरसे भी कायम थे। अमीर खुसरो कवि, जियाबर्नी इतिहासकार, मौलाना याकूब टीकाकार उस जमाने में थे। अलाउद्दीन के जमाने में शराब पीना बड़ा कठोर अपराध था। नैतिक अपराधियों को बड़ी कड़ी सजा देता था। फौजियों को नक्द वेतन मिलता था। सीमावर्ती स्थानों पर होशियार और बहादुर अफसर नियुक्त किये जाते। देश के बड़े बड़े भागों पर अधिकारी और उन के मातहत कर्मचारी होते, निश्चित किये हुए कर दिल्ली को भेजते।

सीमावर्ती स्थानों के अतिरिक्त कभी जल्द जल्द अधिकारियों का तबादला होता। उनका तबादला बादशाह के हाथ में होता। चांदी, सोना, तांबा तीन धातु के सिक्के होते जिन में कीमत, बादशाह का नाम, और राजधानी का नाम होता और दूसरी तरफ अब्बासी खालीफा का नाम।

इस काल में हिन्दुओं को बड़े बड़े पद मिले। अलाउद्दीन और कुतुबुद्दीन के दरबार में हिन्दूर सरदार हाजिर रहते। बहुत से हिन्दुओं ने मुसलमान होकर बड़ी उन्नति की। मलिक खुसरो हिन्दू ही थे जो मुसलमान होकर बादशाह के सहायक हो गये।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

आवागमनीय पुनर्जन्म की वास्तविकता

डॉ० मु० अहमद

वर्तमान काल में भारत को छोड़कर विश्व में कहीं भी आवागमनीय पुनर्जन्म नहीं पाया जाता। यूनान, मिस्र और रोम के निवासियों में इसकी मान्यता न्यूनाधिक रूप में विद्यमान थी, पर उनमें सभ्यता की उन्नति के साथ इसका भी समापन हो गया। कतिपय काव्य–रचनाओं में इसकी प्रति – ध्वनि इस लिए भी प्रमाणित नहीं हो सकती क्योंकि काव्य–कृतियां प्रायः कल्पनाओं के अधिक निकट होती हैं।

वैदिक काल में पुनर्जन्म की धारणा नहीं पायी जाती। हां वेदों में पुनर्जीवन (एक और जीवन) की पुष्ट धारणा अवश्य मिलती हैं वैदिक कालीन लोगों का कर्म इस धारणा में विश्वास था कि जो लोग सत्कर्मी और सुमार्गी हैं उन्हें दूसरी दुनिया में स्वर्ग प्राप्त होगा और दुष्कर्मी एवं कुमार्गी को दुवर्ग (नरक)। कहा गया है –स्वर्गे लोक किंचन भयं नास्ति–स्वर्ग लोक में कुछ भी भय नहीं होता।

शोकातिगः मोदते–वहां शोक का कारण नहीं होता। न जरा जीर्ण अवस्था नहीं होती। अशनायापिपासे अभे तीत्वी–वहां भूख और प्यास से कष्ट नहीं होता क्योंकि वह पदार्थ वहां मिलता रहता है। इसके विपरीत नरक प्रचंड दुखों और यातना का स्थान है वेदों में स्वर्ग और नरक के सम्बन्ध मंच आए हैं, जिनसे इनका पर्याप्त स्पष्टीकरण होता है।

इस्लाम और साइंस

ओबैदुर्रहमान नदवी

मीजान अल अमल में अलगजाली कहते हैं, जो भी सोचता है कि विश्वास (अकीदा) अकेले काफी है, वह इस के अर्थ की जानकारी नहीं रखता है।"

इस्लाम के दृष्टिकोण से ज्ञान (इल्म) का अर्थ है, सच को उजागर करना और मोमिन के अकीदा को मजबूत बनाना है। अल्लाह की पहली वही (ईशवाणी) में पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) को इरशाद है, "अपने रब का नाम लेकर पढ़ो जिसने सब को पैदा किया। इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया। पढ़ते रहो और आप का रब ही सब से बढ़कर करम करने वाला है। जिस ने कलम से इल्म (ज्ञान) सिखाया। इन्सान को ऐसा इल्म सिखाया जो इन्सान जानता न था। (कुर्आन ६६–१–५)।

अल्लाह अपने रसूल से कह सकता था कि मैं तुम्हारा पैदा करने वाला हूं और कायनात का खालिक भी हूं, मेरी पूजा करो। उसने ऐसा नहीं किया।

यह बात साफ है कि खालिक को पहचानने के लिए मुनासिब इल्म का होना जरूरी है। जिन्दगी के राज़ को उजागर करने के लिए इल्म एक अनिवार्य औजार है। इस्लाम में कुदरत के राज को खोज निकालना एक धार्मिक अनिवार्यता समझा जाता है। और यह इबादत के बराबर है। पवित्र कुर्आन कहता है "बस अल्लाह से उसके वही बन्दे डरते हैं जो इल्म वाले हैं।" (३५–२८)। "तुम में से ऐसे ईमान वालों के और इल्म वालों के दर्जात अल्लाह बुलन्द करेगा।" (५८–११)। "क्या इल्म वाले और बे इल्म दोनों कभी बराबर हो सकते हैं? (३६–६)

पैगम्बर मुहम्मद सल्ल० ने फरमाया, "जो आदमी इल्म की तलाश में अपना घर छोड़ता है, लौटने तक अल्लाह की राह में होता है।" एक आलिम एक जाहिद से बढ़कर है।" उलमा नबियों के वारिस हैं, जो अपने पीछे दीनार और दिरहम (दौलत) नहीं छोड़ते। इल्म उनका तर्कः है और जो उसे हासिल करे उसे (तर्कः का) सब से बड़ा हिस्सा मिलता है।"

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल० ने इल्म हासिल करने पर बड़ा जोर दिया है। आप ने फरमाया, "प्रत्येक मुसलमान मर्द और औरत पर इल्म हासिल करना फर्ज है।" पालने से कब्र तक इल्म हासिल करो।" इल्म हासिल करो चाहे इस के लिए किसी को चीन भी जाना पड़े।" अकलमन्दी तमाम मोमिनीन का गोल है। इसे किसी भी जरिये से हासिल करो।" "इल्म एक मुलहिद (नास्तिक) के होंटो से भी ले लो।"

इस्लाम की प्रतिष्ठा विशेषताओं (नुमायां खुसूसियात) में एक यह है कि इस ने धर्म और ज्ञान के बीच घनिष्ट और पवित्र कड़ी गढ़ी। इस हकीकत से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इल्म ही है जिस ने सबसे पहले अपने अनुयाइयों के लि शिक्षा की अनिवार्य बनाया, किसी अन्य धर्म ने ज्ञान प्राप्ति को इतना महत्व नहीं दिया। पवित्र कुर्आन की अनेक आयतों में ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का उल्लेख आया है, कास्मोलाजी, ऐस्ट्रोलाजी, भौतिकी, गणित, ज्योलाजी, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान, कृषि, जीव विज्ञान, शरीर विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, ऐन्थ्रोपोलाजी, इतिहास आदि।

यह कहने की जरूरत नहीं है कि अरब दुनिया में साइंस (इल्म) के लिये 'ज्ञान' या 'सीखना' बोला जाता है।

एक विख्यात लेखक अहमद फरीदुद्दीन लिखते हैं, "कुर्आन में इल्म से सम्बन्धित बातों का उल्लेख ७५० स्थानों पर आया है जबकि कानून का उल्लेख २५० जगह है। (ऐन इनकाउंटर विद इस्लाम)

इस्लाम कहता है, इस कायनात की कोई चीज बेकार नहीं है। पवित्र कुर्आन कहता है, "ऐ हमारे रब तूने यह सब बेमकसद पैदा नहीं किया। तमाम ऐब से तू पाक है, हमको बचा लो आग के अजाब से।" (३–१६१) इस्लाम ज्ञान प्राप्ति का पक्षधर है हिमायती है और इस जमीन और आसमान में जो कुछ है उसके अध्ययन की हिमायत करता है। कुर्आन कहता है, "कह दो आसमानों और जमीन को आंख खोलकर देखो," (१००–१०१), पवित्र कुर्आन आगे कहता है, आसमानों और जमीन का बना देना, और रात दिन का बदलते हुए आना जाना, इस

में निशानियां हैं अक्ल वालों के लिए (३–१६०)।

ध्यान रहे कि शुरू ही से मुसलमानों ने इल्म (साइंस) की ओर ध्यान दिया है। बेशक, मुसलमानों ने साइंस के मैदान में जो योगदान दिया है और जो उपलब्धि प्राप्त की हैं उनका कोई सानी नहीं वे अद्वितीय हैं। खलीफाओं ने भी साइंस के विकास में गहरी दिलचस्पी दिखाई है। तदैव खलीफा मन्सूर, खलीफा हारून और उनके योग्य पुत्र मामून तथा बाद के अन्य खलीफाओं ने विभिन्न तरीकों से साइंस के विकास में रचनात्मक कार्य किया है। खलीफा मामून ने बैतुल हिकमत (बुद्धि–घर) नाम से एक बड़ा रिसर्च सेन्टर कायम किया था। इस सेन्टर से अनेक किताबें अनेक भाषाओं में निकली हैं।

मुहम्मद असद ने अपनी पुस्तक इस्लाम ऐट दी क्रास रोड्स में ठीक ही कहा है, "अरबों ने जो किया वह प्राचीन यूनान के पुनरोत्थान से कहीं अधिक है। उन्होंने पूरी तरह अपनी एक नई साइंसी दुनिया, जो तब तक सम्भावनाओं में शुमार की जाती थीं, को जन्म दिया। और उन्होंने इसे विभिन्न चैनलों से पश्चिमी दुनिया को बताया और यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि आधुनिक साइंसी दुनिया, जिस में हम आज रह रहे हैं, का उदघाटन योरप के ईसाई शहरों में नहीं हुआ था, बल्कि दमिश्क, बगदाद, काहिरा, कुर्तबः, नीशापुर और समरकन्द जैसे इस्लामी केन्द्रों में हुआ था। शुरूआत इन इस्लामी शहरों से हुई है।"

ज्ञातव्य है कि प्रगति तथा विकास में इस्लाम कभी भी रूकावट नहीं बना है। इतिहास दुनिया के अन्य धर्मों से एक उदाहरण भी प्रस्तुत नहीं कर सकता जिस ने साइंस और टेकनालोजी के मैदान में वैसा लीडिंग रोलअदा किया हो जैसा इस्लाम ने किया। विख्यात इस्लामी विद्वान सैयद अबुल हसन नदवी के शब्दों में, "योरोपीय पुनरोत्थान का एक सेक्टर भी ऐसा नहीं है जो इस्लामी विचार के प्रति आभारी न हो। इस्लाम ने योरप की जीवन की एक नयी दमक प्रदान किया।" इसी प्रकार के विचार, डफरिन के मारकीस ने व्यक्त किये हैं। वह कहता है, "योरप मध्ययुग के अन्धेरे से निकलने के लिए मुसलमान साइंस, मुसलमान आर्ट और मुसलमान साहित्य के प्रति बड़ी हदतक आभारी है।"

आश्चर्य है कि इस सच्चाई के बावजूद जब हम साइंस शब्द सुनते हैं तो हमारा ध्यान निश्चित रूप से पश्चिम की ओर आकर्षित होता है। इसके पीछे दो कारण हैं प्रथम यह कि जानिबदार इतिहासकारों ने मुस्लिम साइंसदानों के नामों की अनदेखी की है। अगर उन्होंने कुछ एक के नामों की अनदेखी की है। अगर उन्होंने कुछ एक नामों का उल्लेख किया भी है तो उस भी तोड़ मरोड़ कर पेश किया है। उदाहरण के लिए अबू अली सीना को एवसीना जकरिया अल राजी को रोज, जाबिर इब्न हैयान की जाबेर और अन्य कई। गैर मुस्लिमों की बात तो छोड़ें, पढ़ें लिखे मुसलमान भी नहीं जानते कि एवसीना रोज और जाबेर मुसलमान समुदाय से थे।

समय आ गया है कि हम मुसलमान वैज्ञानिकों के कारनामों को उजागर करें ताकि हमारी नयी नस्ल उनकी उपलब्धियों को जानें और साइंस के इन बड़े कार्यों से फायदा उठायें।

दुर्भाग्य से आज हम शिक्षा पर कम ध्यान दे रहे हैं। जबकि दूसरे हमारे पूर्वजों की वैज्ञानिक उपलब्धियों से फायदा उठा रहे हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है,

नेमतें सब ले गये अहले गुनाह
हम खुदा के खौफ से डरते रहे।

समय की मांग है कि हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दें और उन्हें उच्च गुणों तथा मान्यताओं से संवारें। और तब ही हमारी पिछली प्रतिष्ठा (बेकार) वापस आ सकती है। इसके साथ, अल्लाह ने जो पहली वही अपने अन्तिम नबी मुहम्मद सल्ल० पर कए नयी तहजीब (सभ्यता) को जन्म देने के लिए उतारी उस पर हम अमल कर सकते हैं।

प्रस्तुति : एम हसन अंसारी

आईसीएल न्यूज लेटर जुलाई २००७ से साभार

अगर आप ने रमजान ही में फित्रा निकाल कर मुस्तहक्कीन को पहुंचा दिया तो आप को मुबारक हो वरना ईद के दिन ईदगाह जाने से पहले फित्रा निकाल कर अपने गरीब भाइयों को भी ईद की खुशी में शरीक कीजिए अल्लाह आपको अज्र देगा।

मदारिस का किरदार

बिलाल हसनी नदवी

इस्लाम दुश्मन ताकतों ने शायद ये हकीकत समझ ली है कि जब तक मदारिस बाकी हैं उस वक्त तक मुसलमान बाकी हैं। उन ताकतों ने यह भी समझ लिया है कि मुसलमान मदरसों से मरबूत हैं कि उनको मदरसों से अलग करना दुश्वार तरीन काम है। इसका तजरिबा करके वो देख चुके हैं। वह यह भी समझते हैं कि मदारिस पर बराहरास्त अटैक भी नहीं किया जा सकता। मुसलमानों के लिए इसका बरदाश्त करना कठिन है और शायद इस से बात और बिगड़ जाए इस लिए उन्होंने इसकी नई हिकमते अमली इख्तियार की है और वह यह है कि मदारिस को उनके रास्ते से हटा दिया जाए। मदरसों के नाम बाकी रहें लेकिन वह अपनी इफादीयत खो दें, सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

इस हिकमते अमली को लेकर खुले दुश्मन भी हमारे सामने हैं और वह हमारी आस्तीन के सांप भी हैं जो हमको हर वक्त डसने के लिए तैयार रहते हैं। यूरोप, अमरीका ने ऐसी नस्ल तैयार कर दी है जो खालिस मगरिबी जेहन रखने वाली है। उनकी ऐसी तरबियत की गयी है कि वह उसके अलावा सोचने पर तैयार नहीं बअज नाम निहाद उलमा भी उनकी लय में लय मिलाने लगे हैं। एक खुद साखता आलिम ने तो इन्तिहा कर दी और उनके कलम से ऐसे जुमले निकल गये कि किसी आम मुसलमान के बारे में उसका तसव्वुर मुश्किल था। चेजाय कि एक आलिम और मुफक्किर के कलम से यह बात नकल की जाए लेकिन उससे मगरिब जदा बल्कि ईसायत जदा जेहनियत का अन्दाजा होता है। उनके नजदीक अब निजाम बदलने की जरूरत है। अब किसी हद तक यूरोपीयन माडल इख्तियार करना चाहिए ताकि मुसलमान दुनिया के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल सके। यह बात उन्होंने ढके छुपे नहीं बल्कि खुले लफजों में लिख दी है। उनके नजदीक उसवा–ए–रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हुदूद है, आगे और भी जरूरतें हैं उनको समझना चाहिए, किसी मदरसे का फाजिल यह नहीं कह सकता, अच्छी बात यह है कि वह खुद साख्ता परदाख्ता है।

अब तक योरोप ने ऐसे लोग तैयार किये थे जो अपनी वअज फतअ (पहनाव उढाव तथा रूप) से भी खालिस योरोपियन ही दिखाई देते थे। अब उस ने ऐसे लोगों तक सेंध लगाई जो जाहिरी तौर पर मुकत्तअ चुकत्तअ नजर आते हैं।

ऐसे तमाम लोगों को योरोप ने एक ही बोली सिखाई है और वह यह कि मदारिस में तब्दीली की जरूरत है, जाहिर है कि उसूलों को सामने रखते हुए मअमूली तब्दीलियां तो होती चली आई है, और कियामत तक होती रहेंगी लेकिन मदारिस के मिजाज को बदल दिया जाय और उस के तखस्सुसात को खत्म कर के उस को दूसरे रंग व आहंग से जोड़ दिया जाए यह मदारिस के लिये इजाल–ए–हैसियते उर्फी के मुरादिफ है। (मान हानि के समान है)

इस्लाम दुश्मनों की नई हिक्मते अमली यह है कि मदारिस को उन के मक्सद से फेर दिया जाए ताकि इस्लाम के मजबूत किले (दुर्ग) में शिगाफ (दरार) पड़ जाए इस के लिए उन्होंने मुखतलिफ हर्बे (विधियां) इस्तिअमाल किये, कहीं वह माल का लालच देकर निजाम (प्रबन्ध) बदलना चाहते हैं और बड़ी हमदर्दी का लबादा (वस्त्र) ओढ़ कर वह अपनी बात को बड़ी अहम्मीयत के साथ पेश करते हैं कहीं उन मदरसों को दहशत गर्दी (आतंकवाद) का अड्डा बता कर उस को बन्द करना या उस से खिलवाड़ करना चाहते हैं और यह बात मिली भगत से मीडिया में इतने जोर शोर से कही जाती है कि अच्छे अच्छे लोग गलत फहमी का शिकार हो जाते हैं। कहीं कहीं इस के लिए ऐसी शक्लें इख्तियार की जाती हैं कि तंग आमद ब जंग आमद की मसल सादिक आती है। जब हर तरह से दबाव पड़ता है तो सख्ती इख्तियार करना पड़ती है। फिर मदरसे वालों पर शिददत पसन्दी और तंगनजरी के इलजाम आइद किये जाते हैं, ऐसी सूरते हाल में मदरसे वालों की जिम्मेदारियां बहुत बढ़ जाती हैं । एक तरफ उनको पूरे सब्र व जब्त का मुजाहरा करना है और दूसरी अस्ल जरूरत इस बात की है कि मदारिस के किर्दार (चरित्र) को मुतअस्सिर न होने दिया जाए, मदारिस के सामने जो उस का अस्ल मकसद है यअनी तअलीमे नबवी और तजकिया वह हमेशा पेश नजर रहे, और उसके लिये बेहतर से बेहतर चीजें इख्तियार की जाएं, तीसरी

अहम बात यह है कि अन्दरूने खाना (पारस्परिक) ऐसी कोई बात सामने न आए (जैसे मत भेद शत्रतुता) जो शमातते अअदा का जरिया बने, दुशमनों को हंसने का साधन बने। इस के लिए बड़ी रहतियात (सावधानी) और जुहद व तकवे (संयम) की जरूरत है। मदारिस का शुरूअ से अपना एक मिजाज (स्वभाव) रहा है जिस में खास तौर पर सब्र व जब्त (धैर्य तथा निग्रह) और जुहद व तक्वे की आमेजिश थी, दारे अरकम हो या सुफ्फ–ए–नबवी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इन की तारीख यह बताती है कि तअलीम (शिक्षा) व तजकीया (आचरण शुद्धकरण) दोनों चीजें शाना ब शाना, कन्धे से कन्ध मिला कर चल रही थी, इस तअलीम व तरबियत (शिक्षा तथा शुद्धिकरण) के लिए वही लोग आते थे जो कुछ सोच कर फैसला कर चुके होते वरना।

जिस को हो जान व दिल अजीज, मेरी गली में आए क्यों

मदारिस में उन ही लोगों का काम है जो यह यकीन रखते हैं कि :

सितारों से आगे जहां और भी हैं

अभी इश्क के इम्तिहां और भी हैं।

(अर्थात मरना है, फिर कियामत आना है, ईश राजसभा लगना है, जीवन का लेखा जोखा प्रस्तुत करना है, फिर अच्छे कर्म वालों के लिए ईश्वर की प्रसन्नता तथा जन्नत का सदैव का पुरस्कार है और पैगम्बर (ईश दूत) की बात न मानने वालों के लिए ईश प्रकोप जहन्नम का सदैव का दण्ड है, ईश्वर अपनी शरण में रखे।)

अगर इन सिफात के साथ मकसद (ईश प्रसन्नता) को सामने रखते हुए इन मदारिस को बाकी रखा जाएगा तो इन्शा अल्लाह इन मदारिस वह मतलूबा सिफात (संयम तथा निग्रह) वाले उलमा तैयार होते रहेंगे जिन की हर जमाने में जरूरत रही है और अब कहीं बढ़ चढ़ कर जरूरत है, जो जमाने की नब्ज पहचानते हैं और हालात का मुकाबला करने की हिम्मत रखते हैं। जिन के जमीर (अन्तःकरण) को कोई चैलेंज नहीं कर सकता, जिन को किसी भी मूल्य से खरीदा नहीं जा सकता।

एक अहम तरीन बात यह है कि इन छुपे रास्तों को पहचानने और उन पर निगाह रखने की जरूरत है जहां मदारिस और अहले मदारिस को निशाना बनाया जा रहा है। उन की किर्दार कुशी (चरित्र विनाश) की जा रही है, आप के बीच दाखिल हो कर और मदरसे का वस्त्र पहन कर पूरे निजाम (व्यवस्था) को तहस नहस करने की कोशिशें भी की जा रही हैं। मअमूली इख्तिलाफ (मतभेद) को हवा देकर फूट डाली जा रही है और मुखतलिफ सफों (पंक्तियों) में बांटा जा रहा है। अगर मदरसे वाले और उलमा–ए–दीन ने इन साजिशों (षडयंत्रों) को न समझा तो इस मुल्क में मदारिस ही नहीं मुसलमानों के वजूद का खतरा है, इस लिए एक तरफ अवाम की जिम्मेदारी है कि वह अपने उलमा पर विश्वास रखे अपने दीनी मदरसों पर एअतिमाद रखें और उलमा और मदरसे वालों की जिम्मेदारी है कि वह पूरी बसीरत (सत्य ज्ञान) के साथ मदरसों को उसी मिजाज (स्वभाव) के साथ काइम रखें जो उस का इम्तियाज (विशेषता) है और भूले से भी ऐसी साजिशों का शिकार न होने दें जिस का नुक्सान पूरी उम्मत को भुगतना पड़े।

(अनुवाद : सिद्दीकी)

(पृष्ठ १८ का शेष)

के साथ सूरे भी पढ़ले तो नमाज दुरूस्त होगी या नहीं ?

उत्तर : फरज नमाज की तीसरी या चौथी रकअत में या दोनों रकअतों में भूल कर सुरे मिलादी तो नमाज सही हो जायेगी। सजद–ए–सहव की जरूरत न पड़ेगी।

प्रश्न : रेडियो बनाने की उजरत लेना जाइज है या नहीं?

उत्तर : रेडियो बनाने की जरूरत लेना जाइज है।

प्रश्न : किसी दीनदार की खातिर जमाअत को वक्ते मुकर्ररह से मुवख्खर करना जाइज है या नहीं?

उत्तर : किसी दीनदार शख्स की खातिर किसी वक्त कभी कभार जमाअत को वक्ते मुकर्ररह से मुअख्खर करना बीला कराहत जाइज है।

प्रश्न : सफर में सुन्नतों का क्या हुक्म है?

उत्तर : सफर में सुन्नतों की हैसियत नफल की हो जाती है पढ़ने ना पढ़ने का इखतियार है अगर ठहरे हुए हों तो पढ़ लें।

प्रश्न : अगर नमाजे जुमअ में इमाम से गलती हो जाये तो उसे सजदा सहव करना चाहिए या नहीं?

उत्तर : अगर जुमआ में मजमअ जियादह हो तो सजद–ए–सहव साकित हो जाता है, लिहाजा सूरते मसऊलह में अगर कसीर मजमअ है तो इमाम सजद–ए–सहव ना करे।

कैसे थे पहले के लोग

अबू मतलूब

यह उस समय की बात है जब दीहातों में आठ दिन की मेहनत पर एक रूपया मिला करता था, फिर भी मेरी वालिदा कहा करती थीं कैसा महंगाई का जमाना आ गया है पहले एक रूपये में १६ दिन मजदूर काम करता था। मुझे खूब याद है कि मैं खुद एक पैसे में हल्दी, धन्या मिर्चा तीन सौदे बनिया के यहां से लाता, फिर बा अखलाक बनिया मुंह मीठा करने को गुड़ की एक कंकरी पकड़ा देता।

एक बात बहुत बअद की याद आई, मेरे छोटे बेटे ने घर से चवन्नी उड़ाई बन्या घर पहुंचा और गुड़ मांगा, बन्या समझा घर वालों ने भेजा होगा, चवन्नी का गुड़ तौला तो पूरी एक भेली चढ़ गई, बच्चा तो चौथाई भेली भी नहीं खा सकता था, भोलेपन से बोला इतना गुड़ नहीं थोड़ा चाहिए। बन्या होशियार था घर इत्तिला भेजी तो वालिदा ने जा कर चवन्नी वापस ली और पोते को एक पैसे का गुड़ दिला दिया।

मेरी वालिदा अपने गांव ही में अपने मामूं जाद भाई से ब्याही थीं, तो गांव के बहुत से मुसलमानों की बूबू और हिन्दुओं की दीदी कहलाती थीं और बहुतों की फूफी थीं।

गांव में एक मुंशी नाम के अहीर थे वह वालिदा को फूफू कहते थे। मेरी वालिदा दीन्दार थीं नमाज पढ़ती थी बिल्कुल आखिर में तो हजरत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद जकरिया से बैअत हो गईं थीं जब कि उस से पहले वह हाजी वारिस अली साहिब की मुरीदनी थीं। मेरी वालिदा गांव की लड़की होने के सबब चेहरे का पर्दा न करती थीं गांव के हिन्दू मुसलमानों से बे तकल्लुफ जरूरत पर बातें करतीं।

उस समय दीहात के किसान और छोटे जमीन्दार भी अपने पैसे बक्सों के बजाए हान्डियों में रखा करते थे। मेरी वालिदा भी हांडी में पैसे रखती थीं उस वक्त दीहातों में भी नोट चल चुके थे और १० रूपये तक के नोट दीहातों में पाए जाते थे एक रोज मुंशी अहीर वालिदा के पास आए और कहा फूफू दस रूपयों की बड़ी जरूरत है, घी बेच कर अदा कर दूंगा। वालिदा कोठरी में गईं और दस का नोट ला कर दे दिया, मुंशी अहीर दुआएं देते खुश खुश चले गये।

दोपहर में वालिद साहिब ने किसी काम से दस रूपये मांगे, हान्डी में दो दस के नोट रखे गये थे, वालिदा कोठरी में गईं कि दूसरा वाला नोट ला कर दे दें मगर हांडी में दूसरा नोट न था। ८० दिनों की मजदूरी की रकम थी वालिदा रोने लगीं, वालिद साहब ने सबब पूछा तो बताया नोट तो हांडी में है नहीं वालिद साहिब बोले दूसी हांडी में ढूंढो तुम तो, हांडी बदल बदल कर पैसे रखा करती थीं। सारी हांडियां और मटकियां ढून्ढ डाली गयीं नोट न मिलना था न मिल सका, वालिद साहब ने जोड़ा, असाढ़, सावन और आधा भादो पूरे ढाई महीने की हल्वोह की तन्ख्वाह थी उन पर भी असर पड़ा, दोपहर का खाना न वालिद साहिब ने खाया न वालिदा ने ।

दूपहर ढले मुंशी अहीर दौड़। दौड़ा आया, फूफू। ओ फूफू! इह मां तौ दुई लोट हैं। (इस में तो दो नोट हैं।) वालिदा ने एक नोट यह कहते हुए वापिस लिया कि अरे चिपक कर चला गया होगा, लाओ लाओ, जार्ज पंजूम के फोटू वाला दस का नोट वालिदा ने वापिस लिया औरा बहुत खुश हुईं उधर मुंशी अहीर भी हंसता हुआ और यह कहता हुआ चला गया कि "का हम का बैमानी करकै आपन भैस मरवावै काहें। (क्या हम को बेइमानी करकी अपनी भैंस मरवाना थीं) उन लोगों का अकीदा था कि किसी का माल धोखे से ले लेने से अपना बड़ा नुकसान हो जाता है, और कहते थे देखो फुला चोरी करता है हमेशा तक्लीफ में रहता है, कभी बकरी मरी तो कभी गाय, कभी खुद बीमार कभी मेहरारू, कैसे थे पहले के लोग।"

अफगानिस्तान में धूम्रपान पर रोक

हेरोईन और अफीम के सबसे बड़े उत्पादक देश होने के बावजूद अफगानिस्तान में भी सरकार ने सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान को प्रतिबन्धित करने की दिशा में पहला कदम उठा लिया है।

स्थानीय मीडियाा में प्रकाशित खबरों के अनुसार हाल ही में मंत्रिमंडल की एक बैठक में मीडिया और मस्जिदों को शिक्षण संस्थानों, अस्पतालों और सरकारी कार्यालयों में धूम्रपान को प्रतिबन्धित करने के सरकार के निर्णय को जनता तक पहुंचाने का आदेश दिया था।

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : कहा जाता है कि हक़्क़ुलइबाद जब तक हक़ वाला मुआफ़ न करे मुआफ़ न होगा। तो हक़्क़ुल इबाद में क्या क्या आता है? क्या किसी की ग़लती पर टोका जाए और उसे तकलीफ़ हो या किसी पर हद जारी की जाए और उसे तकलीफ़ हो यह सब हक़्क़ुल इबाद में आता है?"

उत्तर : बेशक गुनाह दो तरह के होते हैं, एक तो हक़्क़ुल्लाह जैसे शराब पी लेना, हराम गोश्त खा लेना यह तो दिल से तौबा करने पर मुआफ़ हो जाते हैं, तौबा की तीन शर्तें हैं १. गुनाह से अलग हो जाना, २. गुनाह पर नादिम होना, ३. आइन्दा गुनाह न करने का अहद करना, (चाहे यह अहद बअद में टूट जाए)

हक़्क़ुल्लाह की एक क़िस्म फ़राइज़ का तर्क करना है जैसे नमाज़ छोड़ना, हज्ज न करना, रोज़े न रखना, ज़कात न देना (ज़कात न देने में हक़्क़ुल्लाह भी है और हक़्क़ुल इबाद भी) इन फ़राइज़ की अदाएगी न करने पर सिर्फ़ तौबा से मुआफ़ी न मिलेगी, अगर इन की अदाएगी मुम्किन है तो तौबा के साथ इनकी अदाएगी भी ज़रूरी है, अलबत्ता अदाएगी ना मुम्किन हो तो अल्लाह ग़फ़ूरूर्रहीम है तौबा से मुआफ़ी की उम्मीद भी है और सज़ा भी हो सकती है।

हक़्क़ुल इबाद उसे कहेंगे जिस में किसी को नाहक़ तक्लीफ़ पहुंचाई गई हो जैसे ग़ुस्से में गाली बक दिया, मार दिया शरअ़ी ज़रूरत के बिना ग़ीबत कर दी चोरी कर ली, जबरन माल छीन लिया, ज़मीन जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लिया वग़ैरह इन सब सूरतों में हक़ की वापसी या मुआफ़ी के साथ ही तौबा क़बूल होगी। हक़्क़ुलइबाद की एक क़िस्म किसी की आबू लूट ली ऐसी सूरत में अगर रज़ामन्दी थी तो दोनों से हक़्क़ुल्लाह का गुनाह हुआ तौबा से मुआफ़ी की उम्मीद है, लेकिन यह गुनाह छुपा है तो छुपे छुपे ही तौबा मुनासिब है। ऐसे गुनाहों का इज़हार ख़ुद गुनाह है। लेकिन इस्लामी हुकूमत में ऐसा गुनाह साबित होने पर दुन्यावी सज़ा मुआफ़ न होगी। रही बात हिक्मत और अच्छे ढंग से किसी की गलती पर नकीर करने से उस को तक्लीफ़ पहुंचना या हद जारी करने में उस को तकलीफ़ पहुंचना यह तो हक़्क़ुल इबाद में आता ही नहीं है, अलबत्ता बे ढंगे तौर पर नकीर करने वाले से मुआख़ज़ा हो सकता है।

प्रश्न : जो हक़्क़ुल इबाद याद होते हैं उन में से मुआफ़ी तलाफ़ी हो जाती है लेकिन बअज भूल जाते हैं उन से तौबा की क्या सूरत हो सकती है?

उत्तर : अल्लाह तआला से हरतौबा के वक्त दुआ करता रहे कि ऐ अल्लाह जो हक्कुल इबाद मैं भूल गया हूं हक बाले से मुझे मआफ करवा दे, मुझे याद दिला दे और मुआफी चाहने की तौफीक दे दे। मेरे दादा के भाई अमजद अली ने बड़ा जुल्म किया था आखिर वक्त कैन्सर में मुब्तला हुए गांव के बड़े थे हर छोटा बड़ा इयादत को आता हर एक से रो कर मुआफी मांगते हर शख्स रो रो कर मुआफ करता, कैसे किस्मत वाले थे। पाठको ! मैं एअलान करता हूं कि मुझ पर जिस का हक हो मुझे मुआफ कर दे अल्लाह तआला उस का बदला देंगे। आप से भी दरख्वास्त है कि आप लोगों में एअलान करते रहा करें कि मुझ पर जिस का हक हो मुआफ कर दे या अपना हक ले ले जजाहुल्लाह खैरा बहर हाल हक्कुल इबाद बहुत सख्त है उस से बचें और चूक हो जाने पर अदा करें या मुआफ करवाएं।

प्रश्न : एक शख्स का निकाह हुआ, निकाह में ईजाब व कबूल हुआ मगर महर का जिक्र न आया, अभी रूखसती न हुई थी कि तलाक हो गई ऐसी सूरत में लड़की क्या पाएगी ?

उत्तर : निकाह हो के रूखसती और मिलाप के बिना तलाक हो गई बहुत बुरा हुआ, ऐसे में लड़की जिसे एक जोड़ा कपड़ा (तीनो कपड़े) मअे चादर या नकाब शौहर की हैसियत के मुताबिका पाने का हक रखती है, ऐसी सूरत में लड़की पर इददत नहीं फौरन किसी भी मुसलमान से निकाह पढ़ा सकती है, तलाक देने वाले शौहर से भी निकाह पढ़ा सकती है, यह तलाक रजअी न होगी अर्थात शौहर बिना निकाह रूजूअ नहीं कर सकता, यह तलाक बाइन होगी चाहे शौहर कहे मैं रजअी तलाक देता हूं चाहे जितने बार तलाक दे तलाक बाइन ही रहेगी, अलबत्ता अगर तीन इक साथ बोल दे

कि तीन तलाके दीं तो तीनों पड़ जाएगी लेकिन अगर तीन बार अलग अलग तलाक तलाक कहा तो एक तलाक बाइन पड़ी।

इसी तरह महर मुकर्रर किये बिना निकाह हुआ रूखसती या मिलाप न हुआ था कि खुदा न ख्वास्ता शौहर का इन्तिकाल हो गया तो लड़की को शौहर के तरके से हिस्सा मिलेगा और चार महीने दस दिन इद्दत भी पूरी करनी पड़ेगी।

प्रश्न : क्या शौहर के इन्तिकाल पर बीवी की चूड़ियं उतार देनी जरूरी है? और जेवर उतर देना जरूरी है?

उत्तर : शौहर के इन्तिकाल के बाद बीवी की चूड़ियां फौरन तोड़ देना कहीं नहीं लिखा है अलबत्ता शौहर के इन्तिकाल के बाद बीवी पर चार महीने दस दिन रंज व गम के हैं पस बीवी के लिये जरूरी है कि वह शौक सिंगार न करे चूड़ियां न पहने जेवर न पहने बहुत अच्छे कपड़े ना पहने चूड़ियां तोड़ने के बजाय आहिस्ता से उतार कर रख दे जेवर उतार कर रख दे अब सादे कपड़ पहन ले जीनत के लिये सुरमा न लगाये जरूरत के लिये लगाये जीनत के लिये मीस्सी न लगाये, मेंहदी न लगाये दवा के लिये लगा सकती है मुम्किन हो तो चार महीने दस दिन की इद्दत शौहर के घर गुजारे सख्त जरूरत या खतरे की हालत में शौहर का घर छोड़ भी सकती है।

प्रश्न : फितरा देना किस पर वाजिब है?

उत्तर : जिस पर कुरबानी वाजिब है। उस पर फितरा देना भी वाजिब है जिस मर्द या औरत के पास छे सौ बारह ग्राम चान्दी हो, या थोड़ी चांदी और थोड़ा सोना हो इतना कि दोनों की कीमत ६१२ ग्राम चांदी के बराबर हो तो वह साहिबे निसाब हैं उसके माल पर साल गुजर जाये तो जकात फर्ज है और साल गुजरे या ना गुजरे ईद के दिन उस पर फित्रा वाजिब है बकरईद में कुरबानी वाजिब है फितरा बालिग औरत सिर्फ अपनी तरफ से दे लेकिन बालिग मर्द अपनी तरफ से दे और अपनी नाबालिग औलाद की तरफ से भी दे बालिग औलाद की तरफ से भी दे तो अच्छा है।

प्रश्न : फितरा कितना दिया जाता है? और कब दिया जाता है? और किस को दिया जाता है?

उत्तर : फितरा ईद के दिन ईद की नमाज से पहले दिया जाता है, रमजान में भी दे सकते हैं। फितरा एक आदमी का एक साअ जौ (३१८५ ग्राम) या आधा साअ गेहूं १५६३ ग्राम ऐसे गरीब को दें जो ना अपने बाप दादा नाना नानी में से हो ना सैयद हो ना अपनी औलाद में हो ना साहबे निसाब हो।

प्रश्न : ईद के दिन सेवइयां क्यों खाई जाती हैं ?

उत्तर : हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथी (सहाबा) ईद की नमाज से पहले खूरमा खजूर या कोई मीठी चीज खाते थे इस लिए सारे मुसलमान ईद की नमाज से पहले कोई मीठी चीज खाते हैं, हमारे हिन्द, पाक, बंगाल देश में सेवइयां खाने का रिवाज पड़ गया जो जायज है जरूरी नहीं है अरब के लोग, मक्का मदीना के लोग तो सेवइयां जानते भी नहीं हैं।

प्रश्न : महरे फातिमी की कीमत क्या है?

उत्तर : महरे फातिमी चार सौ मीस्काल जो १७५० ग्राम चांदी के बराबर होता है जिसकी कीमत २२ अगस्त को अखबार के मुताबिक ३०५३७ रूपया हुई।

प्रश्न : ईद के दिन गाना बजाना कैसा है? और खेलकूद कैसा है?

उत्तर : ईद के दिन अगर सात आठ साल तक कि बच्चियां नअत, हमद वगैरह गाकर खुशियां मनाएं झान्ज के बगेर डफली बजाकर खुशी मनाएं तो जाइज है मगर जरूरी नहीं ना सवाब का काम है बस मुबाह है।

प्रश्न : क्या जकात की रकम गरीबों में बतौर करज दे सकते हैं ?

उत्तर : नहीं जकात की रकम गरीबों को बतौर करज नहीं दे सकते, अगर वह जकात के हकदार हैं तो उनको कर्ज के बजाए जकात दें।

प्रश्न : हालते हमल में तलाक मोअतबर है या नहीं।

उत्तर : हमल में तलाक दी जाये तो वाकेअ हो जाती है हमल मानेअ तलाक नहीं है।

प्रश्न : गोबर जब जल कर राख हो जाये तो वह पाक है या नहीं?

उत्तर : गोबर जब जल कर राख बन जाये तो चूंकि इसकी हकीकत, माहीयत नाम और सिफत तब्दील हो जाते हैं इस लिए पाक है।

प्रश्न : मसजिद की कुछ रकम एक शख्स कर्ज है, क्या मुतवल्ली को हक है कि उसे मुआफ कर दे?

उत्तर : मुतवल्ली को मस्जिद की रकम मुआफ करने का हक नहीं ?

प्रश्न : अगर एक शख्स फरज नमाज की तीसरी या चौथी रकअत में फातिहा

(शेष पृष्ठ १५ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस

(2 अक्टूबर 2007)

एम हसन अंसारी

संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) द्वारा भारत की पहल पर विश्व के १६२ में से १४२ देशों ने १५ जून २००७ करार दाद पास किया कि दो अक्टूबर २००७ को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पूरी दुनिया में मनाया जाये। सन् २००७ में भारत को आजाद हुए साठ साल पूरे हो चुके हैं, इस तरह हम आजादी की हीरक जयन्ती (डायमन्ड जुबली) मना रहे हैं। नौ अगस्त १६४२ को भारत छोड़ो आन्दोलन की शुरूआत हुई, इस घटना को घटित हुए पैंसठ साल हो गये। १८५७ को भी १५० साल पूरे हो चुके हैं। सत्याग्रह आन्दोलन के भी सौ वर्ष पूरे हो चुके हैं। सन् १६८० के बाद दुनिया में मानमानी बढ़ी है। और बढ़ती ही जा रही है जिसे अलग अलग देशों में यू तो अपनी अपनी सोंच (आइडियोलाजी) के अनुसार आकर्षक नाम दे रखे हैं, किन्तु अन्तःकरण में निष्ठा और इच्छाशक्ति की कमी है वरना जिस समस्या के समाधान के लिए दुनिया के देश प्रयासरत हैं, वह सुलझती नजर नहीं आती बल्कि समाज में धन–बल की मनमानी बढ़ती ही जा रही है। क्योंकि यह एक जमीनी सच है। जीना सब चाहते हैं, सुख–सुविधा सब को प्यारी है, लेकिन साथ ही अपनी चौधराहट कायम रहे, और मनमानी चलती रहे, यह भी हो। वस्तु स्थिति का यही दूसरा पहलू बुद्धिजीवियों की चिन्ता का विषय है। मारधाड़ की प्रवृत्ति मनुष्य में जन्मजात होती है, इसी पर नियंत्रण रख कर ही मानव इतिहास ने अपनी सभ्यता की यात्रा तय की है। मानव समाज में हिंसा को अगर मान्यता मिली होती तो सभ्यता का इतिहास कुछ और होता। इस लिए प्रेम अहिंसा और भाई चारा को प्रत्येक सभ्य समाज में अच्छी निगाह से देखा जाता रहा है।

हिंसा (**Violence**) का अर्थ है बल–प्रयोग, आघात करना, तीव्रता, सख्ती, शिद्दत, तशद्दुद। सख्ती विचार, व्यवहार, और जबान की भी होती है। और यह चीजें कमजोर दोनों करते हैं। माल वह खाता है जो कमजोर होता है, बिल्ली के मुकाबले चूहा कमजोर पड़ता है, लेकिन वही चूहा अपनी हिकमत से शेर को भी जाल में फंसा देता है। प्रतिरोध (**Resistance**) मुदाफअत या मुजाहमत कमजोर भी करता है। अंग्रेजी शासन से मुकाबले के लिए गांधी ने अहिंसा (**Non-violence**) अदम तशद्दुद का तरीकः अपनाया। इसी तरीका ने सत्याग्रह (**PEACEFUL RESISTANCE** तथा असहयोग आन्दोलन (**Non Co Opeartion Movement**) को जन्म दिया। यह दो हथियार थे जो हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई में बहुत काम आये परन्तु आज कल इन का प्रयोग निजी स्वार्थ और अपनी गलत मांगों को मनवाने तथा गलत नीतियों को सही साबित करने के लिए किये जाने लगा है। यह गलत तरीकः है। इसे छोड़ना होगा। इस पर चल कर हम भटक जायेंगे। समस्या सुलझने के बजाय उलझती जायेगी।

ऊपर संयुक्त राष्ट्र संघ की जिस करारदाद का जिक्र किया गया है, इस के कार्यान्वयन (**Implementation** अमल दरामद) की दिशा में पहल करते हुए गान्धी स्मृति समिति दिल्ली के तत्वावधान (जेरे एहतमाम) में नौ अगस्त २००७ को डॉ० मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री ने पुस्तक **The Ghandian Way** का विमोचन किया है। इस पुस्तक के सम्पादक आनन्द शर्मा हैं। इस में गांधी जी के सन्देशों को जो प्रेम, अहिंसा और सच से सम्बन्धित हैं, दुनिया के लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है। यह सन्देश सब से अधिक प्रत्येक भारतवासी के लिए सार्थक और लाभकारी हैं। क्योंकि पिछले २५–३० वर्षों में संकीर्ण सोच, समुदाय विशेष के प्रति पक्षपात पूर्ण रवैये (**Biased Attitude**), अदूर दर्शिता और कठिन परिश्रम से बचने तथा शार्ट कट अपनाने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति ने देश को बहुत नुकसान पहुंचाया है। बुराईयां बढ़ी हैं, अच्छाइयां घटी हैं।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "इन्सान के व्यवहार और किरदार में फितनों और माहौल के बुरे प्रभावों का असर पड़ता है, जो व्यक्ति उन्हें कुबूल कर लेता है उस की तरफ झुक जाता है, उन्हें पसन्द करता है और उस में उतर जाता है तो वह भी उस के दिल पर

(शेष पृष्ठ २१ पर)

मौलाना अब्दुल करीम पारिख की वफ़ात

एम० हसन अंसारी

११ सितम्बर २००७ (शअबानुल मुअज्जम २८, १४२८ हिज्री मंगलवार को नागपुर में विख्यात विद्वान, इन्सान, दोस्त, मुफस्सिरे कुर्आन मौलाना अब्दुल करीम पारिख की वफात (मौत) हो गई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन। पारिख साहिब अपनी उम्र के अस्सीवें साल में अपने मालिके हकीकी से जा मिले। उन के जाने से पैदा खाली जगह की भरपाई जल्दी हो पाना मुश्किल है, इसी को अपूर्णनीय क्षति कहते हैं। ऐसा नुकसाान जिस पर जमीन रोये, आसमान रोये दुनिया जहान रोये। जाना सब को है, देर सबेर सब कुछ चला जायेगा, यह संसार नश्वर है, फानी है, बाकी रहने वाली जात सिर्फ अल्लाह की है। और सतकर्म और अमल स्वालेह हैं। अपने किसी प्रिय की मौत पर दुख होता है, दिल रोता है, यह स्वाभाविक है, और जब कोई लोकप्रिय चला जाता है तो लोक रोता है, लोग रोते हैं। कुछ ऐसी ही बात मौलाना अब्दुल करीम पारिख साहिब के दिवंगत हो जाने से पैदा है। ईश्वर दिवंगत आत्मा (रूह जो परवाज कर गई) को शान्ति प्रदान करे और पारिख साहिब को करवट करवट जन्नत नसीब हो। यह हमारी दुआ है। अल्लाह तआला उन की कब्र को नूर से भर देवे।

मौलाना अब्दुल करीम पारिख साहब एक मानवतावादी इस्लामी धर्म गुरू थे। उनका व्यक्तित्व भारतीय उपमहाद्वीपों में एक ख्याति प्राप्त और जाना माना व्यक्तित्व था। मौलाना साहब का जन्म १५ अप्रैल १९२८ को एक ऐसे खानदान में हुआ जो रोजी की तलाश में गुजरात से महाराष्ट्र आया था और जिसको अल्लाह ने नागपुर में ला बसाया। यह घटना कोई ५० साल पहले की है। लकड़ी के एक बड़े व्यापारी होने के साथ–साथ उन्होंने कुर्आन के अध्ययन और उसकी तर्जुमानी को अपना शगफ (तल्लीनता) बनाया। कुर्आन को समझने और समझाने का काम वह अपने कलम और जबान से आधी सदी से अधिक समय तक करते रहे। उन्होंने कुर्आन की तालीम को आम करने के लिए मजलिसे तालीमुल कुर्आन नागपुर की बुनियाद डाली और जामे मस्जिद मोमिनपुरा, नागपुर को इसका सेन्टर बनाया जहां कुर्आन की तालीम का काम नियमित रूप से आज भी जारी है। जामे मस्जिद मोमिनपुर की बनावट, साफ–सफाई, सुव्यवस्था और रखरखाव मौलाना पारिख की सोच, चिन्तन और उन के साफ सुथरे मज़ाज (Taste) की अक्कासी करते हैं। उन्होंने कुर्आन का आसान उर्दू जबान में भाषांतर किया, जिसे आम आदमी समझ सके। उन्होंने जो भी लिखा उसका क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशन भी कराया, और इस काम में फरीद बुक डिपो (प्रा.) लि० जामा मस्जिद, दिल्ली ने प्रशंसनीय सहयोग दिया। उन्होंने कुर्आन का पंचपारा छापा जिसकी विशेषता यह है कि दायें पेज पर कुर्आन का मतन है और बायें पेज पर उस का तर्जमः उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी में छपा है। उनके कलम से निकली किताबों की संख्या तीस से ऊपर है जिन में लुगातुल कुरआन दुनिया भर में १९५२ से उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, गुजराती, बंग्ला, तमिल, तुर्की और मराठी में लगातार प्रकाशित हो रही है।

मौलाना साहब के कुरआन पर व्याख्यान की आडियो, वीडियो कैसेट बड़ी तादाद में मौजूद हैं। उन के तरजमः का तीस आडियो कैसेट्स में कुर्आन का पूरा सेट कारी मो० कासिम अंसारी की आवाज में तैयार हुआ, जिसमें तर्जमः पारिख साहब की आवाज में है। अल्लाह ने उन्हें आवाज भी बहुत अच्छी अता की थी जो दिलों को मोहने वाली थी। जीवन में सादगी थी, संयम था, वह सहज और सरल थे, और हर सांस तथा हर पल को सार्थक बनाना वह खूब जानते थे।

पारिख साहब का सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं से गहरा तअल्लुक था, वह तालीमुल कुर्आन नागपुर के चेयरमैन, सोसाइटी फार कम्यूनल हारमनी, देहली के उपाध्यक्ष, आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के खजांची, नदवतुल उलमा लखनऊ के सदस्य, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ कोर्ट के सदस्य, सिटीजन्स पीस कमेटी नागपुर के सदस्य रहे। उन्हें अल्लाह ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व धर्म सम्मेलनों में भाग लेने का मौका दिया। राष्ट्र ने उन्हें पद्मश्री की उपाधि से अलंकरित

किया, अमेरिका में उन्हें **Pride of India** से नवाजा गया।

समय पालन उनका विशेषगुण था, वह दफ्तर में होते तो दर्जन भर स्टाफ को व्यस्त रखने में उन्हें ज्यादा मेहनत न करनी पड़ती। उस एक आदमी ने एक अकेडमी का काम कर दिखाया। वह महान विचारक मुफक्किरे इस्लाम मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह०) के खलीफा और मजाज भी थे। उनके पसमान्दगान में पांच बेटियां और चार बेटे हैं। वह हिन्दू मुस्लिम एकता के अलमबरदार कायद और हक के हिमायती थे। वह एक बहुत अच्छे इन्सान थे।

महिलाओं के लिये शिक्षा का इन्तेजाम करना मौलाना की खास रूचि रही। विभिन्न धर्मों के बारे में उन की जानकारी बहुत अच्छी थी। सभी धर्मों और उनके मानने वालों के बीच भाईचारगी का पैगाम पूरे देश में फैलाना उनका एक मिशन था और पयामे इन्सानियत फोरम के मंच से उन्होंने इस काम में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। वह एक महान विद्वान थे।

१९८२ की बात है, लेखक को मौलाना पारिख साहब की पुस्तक "गऊ रक्षा" को हिन्दी में अनुवाद करने का अवसर नागपुर ही में मिला। उन दिनों मौलाना की किताब गाय का कातिल कौन? पर मीडिया वालों ने बड़ा वावैला मचाया था, इसके बाद मौलाना से मिलने जब मैं नदवा के मेहमानखाना गया और मिला तो उन्होंने एकान्त में मुझे कोई रकम बतौर इकरामिया देना चाहा, जिसे न लेने के लिये मशक्कत करनी पड़ी। कुछ दिनों के बाद तकिया, रायबरेली की मस्जिद में लखनऊ से आये एक साहब ने मुझे पांच सौ का एक नोट देते हुए कहा, यह आपको मौलाना पारिख साहब ने दिया है। धर्म संकट में पड़ गया कि क्या करूं? ले तो लिया, पर पहली फुर्सत में उस पैसे को किसी कारेनेक में लगा दिया, तब जाकर चैन मिला।

"ऐ ईमान वालो! कुवत हासिल करो सब्र और नमाज से, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। जो कोई भी कत्ल किया जाये अल्लाह के रास्ते में उसे मुर्दा मत कहो बल्कि वह तो जिन्दा हैं लेकिन तुम को पता नहीं चलता। हम जरूर आजमायेंगे तुम को खौफ और भूख से और कुछ माल और जान के नुकसान से और फलों की पैदावार के घाटे में भी । ऐसे मौके पर सब्र करने वालों को खुशखबरी सुना दो। जब भी ऐसे लोगों पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो कहते हैं कि हम सब अल्लाह के हैं और उसी की तरफ पलट कर जाने वाले हैं।" (कुर्आन : २–१५३, १५४, १५६)

(पृष्ठ १६ का शेष)

एक काले बिन्दु के बुरे कारकों (अवामिल) के प्रभावों का सामना होता है और वह व्यक्ति भी उन्हें कबूल करता और प्रभावों का सामना होता है और वह व्यक्ति भी उन्हें पसन्द कर वह उस में दाखिल हो जाता है तो इन काले बिन्दुओं की संख्या उस के दिल में बढ़ती जाती है, यहां तक कि दिल का रंग स्थाई (काला) हो जाता है। यहां पहुंच कर ईमान का नूर उसके दिल से बुझ जाता है और उस व्यक्ति के अन्दर बुरे अखलाक (अनैतिकता) और गन्दी किस्म की आदतें जड़ पकड़ लेती हैं। समय की मांग है कि हम जागें और जगायें। बुद्धिजीवियों (दानिशवरों) के लिए गान्धी जयन्ती के शुभ अवसर तथा अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर यह एक अपील है।

क्या आप जानते हैं?

- संसार का सबसे पहला छविगृह अमेरिका में है।
- संसार का सबसे बड़ा नगर न्यूयार्क है।
- संसार का सबसे ऊंचा पुल सेन्फ्रांसिसको है।
- संसार में सबसे पहले सुबह साइबेरिया में होती है।
- संसार की सबसे बड़ी झील कैस्पियन है।
- संसार का सबसे अधिक वर्षा चेरापूंजी में होती है।
- कछुआ ३५० वर्षों तक जीवित रहता है।
- पक्षियों में गिद्ध सबसे ज्यादा १२५ वर्षों तक जीवित रहता है।
- घोड़ा खड़े–खड़े सोता है।
- संसार में सबसे ऊंची दीवार चीन में है।
- चींटी अपने वजन से २० गुना अधिक वजन ढोती है।

हिन्दी साहित्य के अदब पारे

एम० हसन अंसारी

अदब पारे का अर्थ है साहित्यांश अर्थात साहित्य के अनमोल मोती प्रत्येक साहित्य में उस के अनमोल खजाने मौजूद हैं अगर ऐसे अदब पारों को एकजा कर संकलित किया जाये और उसे नयी तथा प्रौढ़ पीढ़ी के सामने प्रस्तुत किया जाये तो समाज और साहित्य की यह भी एक सेवा है। और अगर प्रकाशन माध्यम इस कार्य में सहयोग करें तो यह प्रयास जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने में जिस की वर्तमान समाज की बड़ी जरूरत है, सहायक सिद्ध होगा। ऐसा हमारा विश्वास है। इसी मकसद के तहत हिन्दी साहित्य के कुछ चयनित अदब पारे यहां प्रस्तुत किये जा रहो हैं। आशा है इन्हें पसन्द किया जायेगा। और जब कोई चीज पसन्द होती है तो वह बहर हाल अपना असर दिखाती है।

"जो समझता है कि दूसरों का उपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरा उसका उपकार कर रहा है, वह भी बुद्धिहीन है। मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं। इतिहास–विधाता (ईश्वर) की योजना के अनुसार। किसी को उस से सुख मिल जाये, बहुत अच्छी बात है, नहीं मिल सका, कोई बात नहीं, परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुंचाने का अभिमान यदि गलत है, तो दुख पहुंचाने का अभिमान तो नितरां (पूर्णतया) गलत है।

दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है। दुखी वह है जिसका मन परवश में है। परवश होने का अर्थ है, खुशामद करना, दान्त निपोरना, चाटुकारिता, हां–हुजूरी। जिसका मन अपने वश में नहीं है, वही दूसरों के मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है, दूसरों को फंसाने के लिए जाल बिछाता है।"

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

"लोग हैं कि बहुत हाथ–पैर पटक रहे हैं, दिन रात जोड़ तोड़ में लगे रहते हैं। कोशिश में तो कभी नहीं हैं पर सिद्धि कुछ नहीं मिल पाती। तो आखिर ऐसा क्यों है? कोशिश को पुरूषार्थ में सिद्धि मानें तो यह दृश्य नहीं दिखना चाहिए कि हाथ–पैर प्रयास करते रहते हैं तो अन्त में यह कह उठें कि क्या करें भाग्य ही उल्टा है, तो इस में गलती नहीं मानी जायेगी। सच ही अधिकांश यह होता है कि उनका और भाग्य का सम्बन्ध उल्टा होता है। भाग्य के स्वयं उल्टे–सीधे होने का तो प्रश्न ही क्या है? कारण, उस की सत्ता सर्वत्र व्याप्त है। तब होता यह है कि ऐसे निष्फल प्रयत्नों वाले स्वयं उस से उल्टे बने रहते हैं, अर्थात अपने को ज्यादा गिनने लग जाते हैं, शेष दूसरों के प्रति अवज्ञा और उपेक्षाशील हो जाते हैं। कर्म में अधिकांश यह दोष रहता है, उस में एक नशा होता है। नशा चढ़ने पर आदमी भाग्य और ईश्वर को भूल जाता है। यों कहिये कि जान–बूझकर भाग्य से अपना मुंह फेर लेता है। तब, उसे सहयोग न मिले तो उस में विस्मय (आश्चर्य) ही क्या है।

अर्थात हमारा स्वार्थ बन जायेगा, पुरूषार्थ वह नहीं कहलायेगा, अगर भाग्य के परमार्थ (लोकहित) से उसे हम नहीं जोड़ सकेंगे। उस स्वार्थ के जो चक्र में है, वे भाग्योदय की प्रतीक्षा में रहे ही चले जा सकता हैं। क्योंकि जिस के उदय की वह राह देखते हं वह तो उदित है ही, केवल उन की पीठ उस तरफ है। इस लिए उन्हें मालूम नहीं है कि जिसको वह सामने देख रहे हैं वह भी उसी के प्रकाश से प्रकाशित है और कमनीय जान पड़ रहा है इच्छायें नाना हैं और नानाविधि ा हैं और वे उसे प्रवृत्त (व्यस्त) रखती है। उस प्रवृत्ति से वह रह–रह कर थक जाता है निवृत्ति (अलग होना) चाहता है। यह प्रवृत्ति और निवृत्ति का चक्र उस को द्वन्द्व से थका मारता है। इस संसार को अभी राग–भाव से वह चाहता है कि अगले क्षण उतने ही विराग भाव से वह उसका विनाश चाहता है। पर छटपटाहट ही उसे हाथ आती है। ऐसी आवस्था में उसका यह सच्चा भाग्योदय कहलायेगा अगर वह नल–नम्र (नम्रता से झुका हुआ) होकर भाग्य को सिर आंखों लेगा और प्राप्त कर्तव्य में ही अपने पुरूषार्थ (पौरूष) की इति मानेगा।" जैनेन्द्र कुमार

"मनुष्य–जाति एक है, यही महाविवेक है
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे।"
मैथलीशरण गुप्त

"विश्व–भर सौरभ से भर जाये
सुमन के खेलों सुन्दर खेले।" (कामायनी)
जय शंकर प्रसाद

भारतीय इतिहास

प्रो. श्रीनेत्र पाण्डेय

अब गावों तथा नगरों के शासन के लिए जो व्यवस्था की थी उसका संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है।

गांव का शासन : गांव का शासन सबसे छोटी इकाई होता था। गांव के प्रबन्ध के लिए एक 'ग्रामिक' होता था वह राजकीय कर्मचारी नहीं होता था वरन् ग्रामवासियों द्वारा चुना जाता था और उसके प्रतिनिधि के रूप में अवैतनिक कार्य का प्रतिष्ठित तथा सम्पन्न व्यक्ति इस पद के लिए चुन लिया जाता था। 'ग्रामिक' अपने सभी कार्य गांव के अनुभवी वयोवृद्धों के परामर्श तथा सहायता से किया करता था। प्रत्येक गांव में राजा का एक कर्मचारी भी होता था जो ग्राम–भृतक' अथवा ग्राम–भोजक कहलाता था। ग्रामिक से ऊपर गोप होता था, जिसके अनुशासन में पांच से दस गांव तक होते थे। गोप के ऊपर स्थानिक होता था। उस के अनुशासन में आठ सौ गांव होते थे। स्थानिक के ऊपर समाहर्ता होता था जो सम्पूर्ण जनपद (जिले) का प्रबन्ध करता था।

नगर का प्रबन्ध : नगरों की समस्याएं गांवों से भिन्न होती हैं। अतएव नगरों के प्रबन्ध के लिए आधुनिक नगरपालिकाओं का सा संगठन किया गया है। यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने नगर प्रबन्ध का अत्यन्त विस्तृत विवरण दिया है। नगर का प्रधान नगराध्यक्ष कहलाता था। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में उसे पौर व्यावहारिक नाम से पुकारा है जो राज्य का उच्चाधिकारी होता था। वह आधुनिक काल के नगर प्रमुख की भांति होता था। मेगस्थनीज के कथनानुसार नगर के प्रबन्ध के लिए ६ समितियां होती थीं और प्रत्येक समिति के पांच सदस्य होते थे। यहां पर एक बात ध्यान देने की यह है कि आज कल भी नगरमहापालिकाओं का कार्य समितियों द्वारा होता है। अतएव यह कहना अनुचित न होगा कि आधुनिक नगरपालिकाओं का बीजारोपण चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन–काल में हुआ था। अब उन समितियों के कार्यों की व्याख्या कर देना आवश्यक है जो नगर के लिए बनाई गई थी।

पहली समिति शिल्प कला की थी। यह समिति शिल्प तथा उद्योग–धन्धों का प्रबन्ध करती थी। कारीगरों की मजदूरी निश्चित करना, उनसे अच्छा काम लेना, उनकी रक्षा का प्रबन्ध करना, कच्चे माल का निरीक्षण करना आदि इस समिति के प्रधान कार्य थे। यदि कारीगरों का कोई अंग भंग कर देता था तो उसे प्राणदण्ड दिया जाता था।

दूसरी समिति विदेशियों की देखभाल करती थी। विदेशियों को हर प्रकार की सुविधा देना उनका प्रधान कार्य था। वह समिति विदेशियों के ठहरने, बीमार हो जाने पर उसकी चिकित्सा करवाने और मर जाने पर उनकी दाह क्रिया का प्रबन्ध करती थी। मर जाने पर विदेशियों की सम्पत्ति उनके उत्तराधिकारियों को दे दी जाती थी।

तीसरी समिति जन–संख्या का हिसाब रखती थी। वह जनगणना करवाती थी और जन्ममरण का हिसाब रखती थी। आज कल भी नगर पालिकाओं को यह कार्य करना पड़ता है। जन–गणना कर लेने से करों के वसूल करने में बड़ी सुविधा होती थी।

चौथी समिति वाणिज्य व्यवसाय का प्रबन्ध करती थी। नाप–तौल की देख भाल करना, बिक्री की वस्तुओं का भाव निश्चित करना और बांटों की समुचित व्यवस्था करना इस समिति का प्रधान कार्य होता था। व्यापारियों को व्यापार करने के लिए सरकारी आज्ञा–पत्र लेना पड़ता था और उसके लिए कर देना पड़ता था।

पांचवीं समिति कारखानों में बनी हुई वस्तुओं की देखभाल करती थी। बेचने वाले नई तथा पुरानी वस्तुओं को मिला नहीं सकते थे। मिलावट करने वालों को कठोर दण्ड दिया जाता था।

छठी तथा अन्तिम समिति कर वसूल करने का काम करती थी। विक्रय की हुई वस्तुओं के मूल्य का दसवां भाग कर के रूप में राज्य को मिलता था। यह कर अथवा चुंगी बड़ी कड़ाई के साथ वसूल की जाती थी और जो लोग इसके देने में बेईमानी करते उन्हें प्राण दण्ड दिया जाता था।

ऊपर चन्द्रगुप्त मौर्य के केन्द्रीय,

प्रांतीय तथा स्थानीय शासन का जो विवरण दिया गया है उससे हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उसका शासन बड़ा ही सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित था और आगामी शासकों के लिए यह पथ–प्रदर्शक और उनके शासन के आधार शिला बन गया। यद्यपि चन्द्रगुप्त के शासन प्रबन्ध का विस्तृत वर्णन दे दिया गया है परन्तु मेगस्थनीज के भारतीय विवरण के बिना यह अधूरा ही रह जाता है। अतएव मेगस्थनीज के भारतीय विवरण का संक्षिप्त उल्लेख कर देना स्थान–संगत होगा। मौर्य शासन के सम्बन्ध में स्मिथ महोदय ने लिखा है, मौर्य शासन बड़ा ही सुसंगठित तथा पूर्ण सुयोग्य एकतंत्र तथा जिसमें अकबर से भी अधिक विस्तृत साम्राज्य पर नियंत्रण रखने की क्षमता थी। बहुत सी बातों में इतने आधुनिक काल की संस्थाओं का पूर्वाभास दिया था।

मेगस्थनीज का विवरण : सिल्यूकस ने मेगस्थनीज को अपना राजदूत बना कर चन्द्रगुप्त की राजधानी पाटलिपुत्र में भेजा था। यह बहुत दिनों तक चन्द्र गुप्त के दरबार में रहा जिससे उसे मौर्य राज–संस्था तथा भारतीय समाज को अपनी आंखों में अपनी इण्डिका नामक पुस्तक में लिख दिया। यद्यपि यह ग्रन्थ में लिखी हैं। इन सबका संग्रह कर लिया गया है जिस के अध्ययन करने पर मेगस्थनीज के भारतीय विवरण का बोध हो जाता है। कुछ इतिहासकारों ने मेगस्थनीज को नितान्त झूठा तथा ढोंगी बतलाया है और उसके विवरण को बिल्कुल अविश्वसनीय बतलाया है। परन्तु वास्तविकता तो यह है कि कुछ उस ने अपनी आखों से देखा उस में सत्य का बहुत बड़ा अंश विद्यमान है परन्तु जो कुछ उसने दूसरों से सुनी–सुनाई बात लिख दी वह असत्य से खाली नहीं है। एक बात और ध्यान देने की यह है कि यूनानी होने के कारण वह भारतीय प्रथाओं को ठीक–ठीक समझ न सका, अतएव उनके विषय में उसने भ्रमात्मक बातें लिख दीं। उसने एक और भूल यह की है कि उसने भारतीय परंपराओं को यूनानी परम्पराओं से मिला दिया है। दक्षिण भारत को उसने देखा न था और उसके विषय में दूसरों से सुनकर लिखा है अतएव उसमें असत्य की मात्रा अधिक है। जो कुछ उसने भारतीय जनश्रुतियों के आधार पर लिखा है वह भी विश्वसनीय नहीं है। परन्तु इन दोनों के होते हुए भी भारतीय इतिहास के निर्माण में मेगस्थनीज के विवरण से बड़ी सहायता मिलती है। उसने भारत की भौगोलिक सामाजिक तथा राजनीतिक दशा पर काफी प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है।

भौगोलिक दशा : भारतकी सीमा का वर्णना करते हुए मेगस्थनीज ने लिखा है कि इसके उत्तर में हिमालय पर्वत, दक्षिण तथा पूर्व में समुद्र और पश्चिम में सिन्धु, गंगा, सोन आदि नदियां विद्यमान हैं। दक्षिण–भारत की नदियों का उल्लेख उसने बिल्कुल नहीं किया है। चूंकि अफगानिस्तान चन्द्रगुप्त के साम्राज्य का अंग था अतएव उसने अफगानिस्तान की काबुल, स्वात, गोमल आदि नदियों का उल्लेख किया है। जलवायु के विषय में उसने लिखा है कि गर्मी की ऋतु में बड़ी गर्मी पड़ती है। वर्षा गर्मी तथा जाड़ा दोनों ही ऋतुओं में होती है, परन्तु गर्मी के दिनों में अधिक वर्षा होती है।

जिलों की मुस्लिम आबादी

मायावती सरकार द्वारा चिन्हित कथित आतंकवादी गतिविधियों की सक्रियता वाले जिलों की मुस्लिम आबादी :

लखनऊ	:	748687
मेरठ	:	975715
गाजियाबाद	:	782915
बुलंदशहर	:	613660
सहारनपुर	:	1132919
मुजफ्फरनगर	:	1349629
आगरा	:	323634
अलीगढ़	:	531956
फिरोजाबाद	:	260414
बरेली	:	1226386
कानपुर	:	653881
बहराइच	:	829361
गोंडा	:	532585
बलरामपुर	:	593907
सिद्धार्थनगर	:	600336
गोरखपुर	:	344960
महाराजगंज	:	357822
वाराणसी	:	497516
श्रावस्ती	:	301117
बस्ती	:	306540
फैजाबाद	:	304434
मुरादाबाद	:	1735381
बिजनौर	:	1306329
रामपुर	:	945277
अंबेडकरनगर	:	332212
बाराबंकी	:	589197
मऊ	:	353003
बागवत	:	387871

महामायानगर, जेपी नगर, गौतमबुद्ध नगर, मथुरा और लखीमपुर खीरी का आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। मुसलमानों की संख्या सरकारी आंकड़ों पर आधारित है।

बन्दों के हुकूक

अनुवाद इरफान फारूकी नदवी

बन्दों के हुकूक का मामला बहुत अहम है। लोगों को ज्यादातर इस की कोई फिक्र नहीं होती। दीनदारी तो बस नमाज कुर्ता और दाढ़ी में रह गई है। हजरत सुफियान सौरी रहमतुल्लाह अलैहि फरमाया करते थे। अगर कोई आदमी अल्लाह की सत्तर नाफरमानी लेकर अल्लाह के सामने कियामत के मैदान पहुंचे तो यह इससे हलका जुर्म है कि किसी आदमी का एक हक लेकर कियामत के मैदान में हाजिर हो। क्योकि अल्लाह तआला तो गनी व बेनियाज है उसे किसी कोई परवाह नहीं इस लिए वह माफ कर सकता है और उससे माफी की उम्मीद रखी जा सकती है। लेकिन चूंकि बन्दे मोहताज हैं इसलिए उनके हुकूक व अधिकार का ध्यान रखना और उनके हुकूक से अपने को पाक साफ रखना बहुत जरूरी है। बन्दों से यह उम्मीद रखना कि कियामत में माफ करा लेंगे बेवकूफी है। वहां सब लोग जरूरतमंद मोहताज होंगे। डूबते को तिनके का सहारा बहुत होता है वह इस परेशानी की हालत में थोड़ा–थोड़ा सहारा ढूंढते फिरेंगे और हर आदमी जिसके ऊपर उसका कोई हक है उससे पूरा हक वसूल करना चाहेगा पाई पाई का हिसाब लेगा। मरने के बाद मरने वाला जो मीरास छोड़ जाता है तो उसके बारे में जाहिल और बेदीनों का क्या कहना अच्छे–अच्छे मौलवी साहब, पीर साहब भी सही से हिस्सेदारों को हिस्सा नहीं देते और जिस तरह अल्लाह तआला ने बांटने का हुक्म दिया है उसके हुक्म के हिसाब से नही बांटा जाता। यतीमों और बेवाओं के हिस्से दूसरे लोग ही खा जाते हैं और मरने वालों की बीवियों और बेटियों के उनका हिस्सा नहीं दिया जाता। लेकिन वह काम जो कुरआन हदीस से साबित नही उन्हें दीन समझ कर मीरास के माल को बंटवारे से पहले उसमें खूब खर्च करते हैं पैसा देकर कुर्आन पढ़वाया जाता है जो हराम है तीजे, चालीसवें, नवें होते हैं, जो बिदअत है जिनका कुरआन व हदीस में कोई सुबूत नहीं और इसके साथ इन कामों में दिखावा भी होता है। यतीमों और बेवाओं को हिस्सा जो उन्हें मीरास में मिलना है बिदअत और खुराफात में खर्च करते चले जाते हैं और इस्लामी कानून की हिसाब से मुर्दो के छोड़ी हुई मीरास को बांटने से जान चुराते हैं।

देखा यह गया है कि जहां दो बीवियों की औलाद हुई उनमें से जिस बीवी या जिस लड़की के पास मरने वाले का जो कुछ भी होता है ले उड़ती है यह नहीं सोचा जाता कि यह तर्के का माल और इसमें का हिस्सा और उसमें मीरास का कानून जारी होगा। अगर इस माल को बांटा न जाए और जिसके कब्जों में किसी हकदार का हक होगा उसे हराम खाने का गुनाह होगा। यह माल की मुहब्बत उसे आखिरत के अजाब में फंसा देगी। सूरः फज्र में दुनिया वालों का हाल बताते हुए फरमाया : "बल्कि बात यह कि तुम यतीम का एहतिराम नहीं करत और गरीब व दरिद्र को खाना खिलाने पर नहीं उभारते और मीरास का माल समेट कर खा जाते हो और माल से बहुत ही मुहब्बत रखते हो। (सूरःफर्ज)

यह माल की मुहब्बत यतीम के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करने देती, यतीम पर जुल्म भी होता है उसका मीरास वाला हिस्सा भी दबा लिया जाता है और दूसरे तरीकों से भी उसका हक मार लिया जाता है। ऐसा समझा जाता है कि यतीम खानों में जो माल चन्दा करके इकट्ठा किया जाता है उस में घोटाला करना यतीम का माल खाना है। जबकि मीरास इस्लामी कानून के हिसाब से न बांटने की वजह से घर घर यतीमों का माल खाया जा रहा है, सूर : निसा में है – जो लोग यतीमों का माल जुल्म व अत्याचार करके खाते हैं वह लोग अपने पेटों में आग ही भरते हैं और वह जल्द ही दहकती हुई आग में दाखिल होंगे। (निसा)

कर्ज बहुत बड़ी मुसीबत है। मशहूर मुहावरा है कर्ज मुहब्बत की कैंची है। अरबी में कर्ज का मतलब ही काटना होता है। बहुत लोगों को कर्ज की आदत होती है जरूरत बेजरूरत कर्ज लेते रहते हैं और जब बहुत कर्ज चढ़ जाता है तो ढीट हो जाते हैं और हर ऐसे आदमी की ताक में रहते हैं जिससे कर्ज मिल सकता हो, जहां कहीं नए आदमी से मेल जोल हुआ बस उससे उधार लिया। अब वह बेचारा आगे पीछे फिरता है लेकिन उधर देने का नाम नहीं लेते। जब उधार लिया

था तो दूसरा मुंह था, भीगी बिल्ली बने हुए मिन्नत व समाजत कर रहे थे। अब उधार मांगने वाला आता है तो उसका चेहरा भी नहीं देखना चाहते, उसको देखा तो बुखार चढ़ गया, और कभी भेंट हो गई तो ऐसा लगता है जैसे पहचानते ही नहीं और कोई कोई तो बड़ी बदतमीजी व ढिठाई के साथ कह देते हैं कि मैं नहीं दूंगा जो तुम से हो सके कर लो।

उधार बहुत मजबूरी में लेना चाहिए और जैसे ही उधार का इन्तिजाम हो जाए उसी समय चुकता कर देना चाहिए, यह न करके जब वहां से पैसे मिलेंगे तब देंगे, घर की चीजें बेचकर मेहनत मजदूरी करके जिस तरह भी हो जल्दी से जल्दी उधार अदा कर दिया जाए और दूसरा उधार मांगने से पहले पहला उधार चुका दें।

उधार का इन्तिजाम होते हुए भी उधार चुकता न करना इसको हदीस में मत्ल (टाल मटोल) कहा गया है हदीस में फरमाया गया कि "जिसके पास कर्ज अदा करने के लिए पैसा हो उसका टाल मटोल करना जुल्म है। (बुखारी) जिस आदमी ने तुम्हारे साथ भलाई की तुम्हारे समय पर काम आया उसको यह सजादे रहे हो कि वह बार–बार पैसा मांगने आए और वापस चला जाए और पास पैसा होते हुए भी उसको न दिया जाए यह दीन और अक्ल दोनों के हिसाब से जुल्म व अत्याचार की बात है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कर्ज को छोड़ कर शहीद का हर गुनाहा माफ कर दिया जाता है। (मुस्लिम)

देखिये शहीद होना कितनी बड़ी नेकी का काम है कि अल्लाह तआला को खुश करने के लिए अल्लाह तआला के दीन के लिए जान तक दे दी लेकिन बन्दों का जो हक था वह फिर भी माफ नहीं हुआ। जिसका कुछ भी अपने ऊपर वाजिब हो चाहे उधार लिया हो या और किसी कारण से उसका हक निकलता हो जल्दी से जल्दी दे दिया जाए। हजरत मुहम्मद सल्ल० के समय जब जनाजा लाया जाता तो पूछते कि इसके ऊपर किसी का उधार तो नहीं है और सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम कहते कि उस पर उधार है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस के जनाज़े की नमाज न पढ़ते आप फरमाते कि तुम लोग नमाज पढ़ लो। (बुखारी)

इस लिए अपनी इबादतों नमाज रोजा तस्बीह, पढ़ने तिलावत करने आदि से धोके में न रहना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि हमने बहुत इबादत कर ली है हक वालों के हक में से दे देंगे। यह बड़ी बेवकूफी की बात है। दुनिया में थोड़ी दुनिया ली उसके बदले में नमाज रोजा देकर दोजख चले गए। हजरत अबू हुरैरा कहतेहैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम से पूछा कि तुम जानते हो गरीब व दरिद्र कौन है? सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम ने कहा हम दरिद्र उसे समझते हैं जिसके पास रूपया और माल न हो। हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी उम्मत का मुफ्लिस (दरिद्र) वह है जो कियामत के दिन रोजा नमाज, जकात लेकर आएगा उसने नमाज भी पढ़ी होगी, रोजे भी रखे होंगे जकात भी दी होगी लेकिन उस सब के बाद भी कियामत के मैदान में यूं आएगा कि किसी को गाली दी होगी और किसी का नाहक माल खाया होगा और किसी का खून बहाया होगा और किसी को मारा होगा और चूंकि कियामत का फैसले का दिन हो उस दिन उसका फैसला इस तरह होगा कि उसने जिसको सताया होगा और जिसका हक मार खाया होगा सबको उसकी नेकियां बांट दी जाएंगी कुछ इन हक वाले को भी कुछ उन हक वाले को दी जाएंगी। फिर अगर उनका हक मिलने से पहले इसकी नेकियां खत्म हो गईं तो उसके सर हकदारों के गुनाह डाल दिए जाएंगे फिर उसको जहन्नम में डाल दिया जाएगा। (मुस्लिम)

कद्दू बनेगा दवा मधुमेह रोगियों के लिए

मधुमेह रोगियों के दस्तरखान पर जल्द ही कद्दू को सबसे लजीज और अजीज सब्जी का दर्जा प्राप्त हो सकता है। चीन के कुछ वैज्ञानिकों ने गत दिनों दावा किया है कि रोजाना कद्दू को अपने आहार में शामिल करने से विश्व भर के करोड़ों मधुमेह रोगियों को इंसुलिन के इंजेक्शनों से एक हद तक निजात मिल सकती है। दैनिक चाइना डेली ने अमेरिका के जर्नल ऑफ द साइंस ऑफ फूड एण्ढ एग्रीकल्चर में छपे एक शोध पत्र में बताया है कि इन वैज्ञानिकों ने कद्दू में एक करामाती तत्व खोज निकाला है। यह तत्व मधुमेह से ग्रसित चूहों में इंसुलिन हार्मोन का निर्माण करने वाली क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को नये सिरे से तैयार करने में मदद करता है।

हमारे हुजूर

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख़लाक

अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी

किसी ने मुसलमानों की मां हजरत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से पूछा कि रसूल (सल्ल०) के अखलाक व व्यवहार कैसे थे? उन्होंने कहा क्या तुमने कुर्आन नहीं पढ़ा? जो कुछ कुर्आन में है वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के अखलाक थे। आप की पूरी जिन्दगी कुर्आन की अमली तफ्सीर (व्याख्या) थी और यह भी आप (सल्ल) का एक मोअजिजः (चमत्कार) है खुद कुर्आन ने इसकी गवाही दी और कहा बेशक ऐ मुहम्मद! व्यवहार के आप बड़े पद पर हैं।

हुजूर (सल्ल०) बहुत ही ज्यादा मिलनसार, मेहरबान, विनम्र और रहम दिल थे। छोटे बड़े सबसे मुहब्बत करते, बहुत ज्यादा दानी और इनाम देने वाले थे। जब तक आप से हो सकता सब का सवाल पूरा करते पूरी उम्र किसी से मांगने पर नहीं कहा। खुद भूखे रहते और दूसरों को खिलाते। एक बार एक सहाबी की शादी हुई उनके पास दावत वलीमा का कुछ सामान न था। कहा आइशा के पास जाओ और आटे की एक टोकरी मांग लाओ। जबकि उस आटे के सिवा शाम के लिए घर में कुछ न था। दानशीलता व दुन्या के माल से दूरी का यह हाल था कि घर में कोई चीज भी होती जब तक वह सदकः न कर दी जाती जब तक घर में आराम न करते। एक बार फिदक के रईस ने चार ऊंट अनाज भेजा उसको बेचकर कर्ज चुकता किया गया फिर भी कुछ बच रहा आप (सल्ल०) ने कहा जब तक कुछ बाकी रहेगा मैं घर में नहीं जा सकता। रात मस्जिद में बसर की दूसरे दिन जब मालूम हुआ कि वह अनाज बांट दिया गया तब घर में आए।

हुजूर (सल्ल०) बहुत ज्यादा मेहमानों को खाना खिलाने वाले थे। आप (सल्ल०) के यहां मुसलमान, मुश्रिक, काफिर सब ही मेहमान होते। आप (सल्ल०) सबकी इज्जत व सम्मान करते और खुद ही उनकी सेवा करते, कभी ऐसा होता कि मेहमान आ जाते और घर में जो कुछ होता वह उनको खिला पिला दिया जाता और पूरा घर फाका (उपवास) करता।

एक बार आप (सल्ल०) के यहां एक काफिर मेहमान हुआ आप (सल्ल०) ने दूसरी बकरी मंगवाई यह उस का भी दूध पी गया, इस तरह सात बकरियों की बारी आई जब तक उसका पेट न भर गया आप (सल्ल०) उसे दूध पिलाते रहे। रातों को उठ–उठ कर उनकी देखभाल करते कि उनको कोई तकलीफ तो नहीं है। घर में रहते तो घर के काम काज अपने हाथों करते, अपने फटे कपड़े आप सी लेते, अपने फटे जूते खुद गांठ लेते, बकरियों का दूध अपने हाथ से निकालते, सब के साथ सबके बराबर होकर बैठते। मस्जिद नबवी के बनाने और खन्दक (गढ़ा) खोदने में सब मजदूरों के साथ मिलकर आप (सल्ल०) ने भी काम किए।

आप सल्ल० यतीमों अनाथों से मुहब्बत रखते, आप उनसे भलाई करने के लिए कहते। आप (सल्ल०) ने एक बार कहा मुसलमानों का सबसे अच्छा घर वह है जिस में किसी यतीम के साथ भलाई की जा रही हो और सबसे बुरा घर वह है जिसमें किसी यतीम के साथ बुराई की जा रही हो।

आप (सल्ल०) की चहेती बेटी हजरत फातिमा (रजि०) ने जिनकी हालत यह थी कि चक्की पीसते–पीसते हथेलियां घिस गई थीं और मशक में पानी भर भर कर लाने से नीले दाग पड़ गए थे– आप (सल्ल०) से एक दिन एक दासी मांगी। आप (सल्ल०) ने जवाब दिया– फातिमा ! बद्र के यतीम तुमसे पहले सवाल कर चुके हैं। एक रिवायत में है कि आप (सल्ल०) ने कहा – फातिमा! सुफ्फा (बसूतर।) के गरीबों का अब तक कोई इन्तिजाम नही हुआ है तो तुम्हारा सवाल कैसे मान लूं।

गरीबों के साथ आपका व्यवहार ऐसा था कि उन्हें अपनी गरीबी महसूस न होती उनकी मदद करते और उनका दिल बहलाते, ज्यादातर दुआ मांगते थे कि ऐ अल्लाह! आखिरत में मुझे गरीबों के साथ उठा। एक बार एक पूरा कबीला आप (सल्ल०) के पास आया। यह लोग इतने गरीब थे कि उनमें से किसी के बदन पर कोई ठीक कपड़ा न था। नंगे बदन नंगे पांव। उनको देखकर आप पर बहुत असर हुआ। परेशानी में अन्दर गए और फिर बाहर आए उसके बाद सब मुसलमानों को इकट्ठा करके उनकी मदद के लिए कहा।

आप (सल्ल०) मजलूमों की दुहाई सुनते और इन्साफ के साथ उनका हक उन्हें दिलाते, कमजोरों पर रहम करते, मज़बूरों का सहारा बनते, कर्जदारों का कर्ज खुद देते, हुक्म था कि जो मुसलमान मर जाए और अपने जिम्मे कर्ज छोड़ जाए तो मुझे खबर दो मैं उसका कर्ज चुकता करूंगा और जो माल छोड़कर मरे वह वारिसों (उत्तराधिकारी) का हक है मुझे उससे कोई मतलब नहीं।

आप (सल्ल०) बीमारों को तसल्ली देते, उनको देखने जाते, दोस्त व दुश्मन, मुसलमान व काफिर इसमें सब एक समान थे। गुनहगारों को माफ करे देते, दुश्मनों के लिए भलाई की दुआ करते, जानी दुश्मनों और कातिलाना हमले करने वालों तक से बदला नहीं लिया। एक बार एक आदमी ने आप (सल्ल०) के कत्ल का इरादा किया। सहाबा (सल्ल०) उसको गिरफ्तार करके लाए वह आप (सल्ल०) को देखकर डर गया। आप (सल्ल०) ने कहा डरो नहीं अगर तुम मुझे कत्ल भी करना चाहते भी तो नहीं कर सकते थे।

हिबार बिन अल्अस्वद जो एक तरह से हुजूर (सल्ल०) की लड़की हजरत जैनब का कातिल था, मक्का जब फतह (विजय) हुआ तो उसने चाहा कि ईरान भाग जाए लेकिन वह सीधे हुजूर (सल्ल०) का रहम याद आया। अब मैं हाजिर हूं और मेरे जिन जुर्मों की खबर आपको मिली है वह बिल्कुल सही है। हुजूर (सल्ल०) ने उसे माफ कर दिया।

पड़ोसियों का हाल चाल लेते, उनके यहां तोहफे भेजते, उनका हक पूरा करने को कहते। एक दिन सहाबा (रजि०) बैठे हुए थे आप (सल्ल०) ने कहा – अल्लाह की कसम वह मोमिन न होगा। सहाबा ने पूछा कौन या रसूलुल्लाह! कहा वह जिस का पड़ोसी उसकी शरारतों से बचा न हो। आप (सल्ल०) पड़ोसियों के घर जाकर उनका काम कर आते। मदीना की लौंडिया (दासी) आप (सल्ल०) के पास आतीं और कहतीं या रसूलुल्लाह! यह मेरा काम है आप (सल्ल०) उसी वक्त उठ खड़े होते और उनका काम कर देते। बेवा (विधवा) हो या गरीब या कोई और जरूरतमन्द सबकी जरूरत आप (सल्ल०) पूरी कर देते और दूसरों के काम करने में शर्म महसूस न करते।

बच्चों से बड़ी मुहब्बत करते चूमते और प्यार करते थे। फसल का नया मेवा सबसे कम उम्र बच्चा जो उस वक्त वहां होता उसे देते, रास्ते में बच्चे मिल जाते तो खुद उनको सलाम करते। इस्लाम से पहले औरतें हमेशा जलील व अपमानित समझी जाती थीं लेकिना हमारे हुजूर (सल्ल०) ने उन पर बहुत एहसान किया उनके हक व अधिकार ठहराये और अपने बर्ताव से यह बता दिया कि गिरोह भी घटिया नहीं है। बल्कि इज्जत व हमदर्दी के लायक है। आप सल्ल० के पास हर वक्त मर्द जमा रहते थे औरतों को आप (सल्ल०) की बात सुनने का मौका न मिलता, इस लिए खुद औरतों के कहने पर आप (सल्ल०) ने उनके लिए एक दिन मुकर्रर कर दिया। औरतें आप (सल्ल०) से दिलेरी से और बेझिझक सवाल करतीं लेकिन आप (सल्ल०) बुरा न मानते उनकी इज्जत व सम्मान का ध्यान रखते थे।

आप (सल्ल०) सारी दुनिया के लिए रहमत बनकर आए थे, इसलिए किसी के साथ भी ज्यादती व नाइन्साफी को पसन्द नहीं करते, यहां तक कि जानवरों के साथ जो लोग बेपरवाही करते थे तो उसे भी आप (सल्ल०) सहन न कर सकते थे, और इन बेजबानों पर जो जुल्म होता था आकर उसको रोक देते।

एक बार एक साहब ने एक चिड़िया का अण्डा उठा लिया चिड़िया बेचैन होकर पर मार रही थी। आप (सल्ल०) ने पूछा किसने अण्डा लिया है और उसको दुख पहुंचाया है? उन साहब ने कहा या अल्लाह के रसूल! मैंने यह किया है। आप ने हुक्म दिया कि वहीं रख दो।

आप (सल्ल०) की नजर में अमीर बगरी सब बराबर थे। कबीला मख्जूम की एक औरत चोरी के जुर्म में गिरफतार हुई लोगों ने हजरत उसामः (रजि०) जिनको आप (सल्ल०) बहुत चाहते थे– से सिफारिश कराई। हुजूर (सल्ल०) ने कहा तुमसे पहली कौमें इसलिए बर्बाद हो गईं कि जब कोई बड़ा आदमी जुर्म करता तो उसको छोड़ देते और गरीब आदमी जुर्म करता तो सजा पाता। अल्लाह की कसम अगर मुहम्मद (सल्ल०) की बेटी फातिमा चोरी करती तो उसके भी हाथ काटे जाते।

हजरत अनस (रजि०) कहते हैं कि मैं दस साल आप (सल्ल०) की सेवा में रहा, मगर आप (सल्ल०) ने न कभी डांटा, न पूछा कि तुमने यह काम क्यों किया और क्यों न किया। आप (सल्ल०) ने पूरे उम्र में कभी किसी को नहीं मारा और यह क्या अजीब बात है

मुसलमानों का जनरल जिसने लड़ाई में ६ साल काटे और जिसने कभी लड़ाई के मौदान में मुंह न मोड़ा, उसने कभी अपने दुश्मनों पर तलवार न उठाई और न अपने हाथ से किसी पर वार किया। उहद के मैदान में जब हर तरफ से आप (सल्ल०) पर पत्थरों तीरों और तलवारों की बारिश हो रही थी, आप (सल्ल०) अपनी जगह पर खड़े थे जान न्यौछावर करने वाले सहाबा दाएं–बाएं कट–कट कर गिर रहे थे।

इसी तरह हुनैन की लड़ाई में ज्यादातर मुसलमान लड़ाकों के पांव उखड़ चुके थे हुजूर (सल्ल०) पहाड़ की तरह अपनी जगह खड़े थे। सहाबा (रजि०) कहते हैं ज्यादातर लड़ाइयों में आप (सल्ल०) वहां खड़े होते थे जहां बड़े–बड़े बहादुर खड़ा होना अपनी बहादुरी का अखिरी कारनामा समझते थे। मगर ऐसी खतरनाक जगह पर खड़े होकर भी दुश्मन पर हाथ न उठाते थे। उहुद के दिन जब मुश्रिकों के हमले में सर जख्मी हुआ और दांत शहीद हुए। आप (सल्ल०) यह कह रहे थे। अल्लाह इन्हें माफ करे कि यह नहीं जानते।

सालों साल की नाकामी की तक्लीफों के बाद भी मायूसी ने कभी आप (सल्ल०) के दिल में रास्ता न पाया और आखिर वह दिन आया जब एक सहाबी ने कहा कि या रसूलुल्लाह! आप हम लोगों के लिए क्यों दुआ नहीं करते? यह सुनकर आपका चेहरा लाल हो गया और कहा तुमसे पहले के लोगों को आरा से चीरा गया। उनके बदन पर लोहे की कंघिया चलाई गईं जिससे चमड़ा व गोश्त सब कट कट जाता था। लेकिन यह तक्लीफें भी उन्हें सच्चाई से न हटा सकीं। अल्लाह की कसम ! इस्लाम पूरा होकर रहेगा। यहां तक कि सनआ (यमन) का एक सवार इस तरह बेखटके चली जाएगा कि उसको अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा।

आप (सल्ल०) का वह पक्का इरादा व धैर्य याद होगा जब आप (सल्ल०) ने अपने चाचा को यह जवाब दिया था कि चाचा जान ! कि कुरैश अगर मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बाएं हाथ में चांद रख दें तो मैं सच्चाई के ऐलान से न रूकूंगा।

एक बार दोपहर को एक लड़ाई में आप (सल्ल०) एक पेड़ के नीचे अकेले आराम कर रहे थे एक अरब आया और तलवार खींच कर बोला बता ऐ मुहम्मद ! अब तुझको मुझसे कौन बचा सकता है? इत्मिनान व सुकून से भरी हुई आवाज में जवाब दिया – "अल्लाह" वह यह सुनकर कांप गया और तलवार म्यान में कर ली।

लड़ाइयों के लूट का माल और खैबर आदि के पैदावार को सुनकर कोई यह न समझे कि अब इस्लाम की गरीबी का जमाना खत्म हो गया और रसूल (सल्ल०) बड़े इत्मिनान व आराम से जिन्दगी बसर करने लगे। नबी (सल्ल०) की बीवियों के यहां जो कुछ भी आता वह दूसरे गरीबों को दे दिया जाता और खुद आप (सल्ल०) और आप के घर वालों की जिन्दगियां उसी तंगी और गरीबी से कट रही थी। आप (सल्ल०) कहा करते थे। आदम के बेटे को शर्म के लायक जिस्म का हिस्सा छुपाने को एक टुकड़ा और पेट भरने को सूखी रोटी और पानी काफी (पर्याप्त) है और इसी पर आप की करनी थी। हजरत आइशा (रजि०) कहती हैं आपका कपड़ा कभी तह करके रखा नहीं जाता था यानी एक ही जोड़ा होता था दूसरा नहीं जो तह करके रखा जाता।

हजरत (सल्ल०) के घरों में ज्यादातर खाना नहीं पकता था और कई–कई दिनों रात को खाना नहीं मिलता था। दो–दो महीना लगातार घरों में चूल्हा जलने की बारी न आती थी, थोड़ी खजूरों पर गुजर बसर होता था कभी कोई पड़ोसी बकरी का दूध भेज देता तो वही पी लेते। हजरत आइशा (रजि०) कहती हैं कि आप (सल्ल०) ने कभी मदीना में पेट भर कर खाना नहीं खाया।

एक बार की बात है एक भूखा आप (सल्ल०) के पास आया। आप (सल्ल०) ने किसी बीवी के यहां कहला भेजा जवाब आया घर में पानी के सिवा कुछ नहीं। आप (सल्ल०) ने दूसरे घर में आदमी भेजा इस तरह आठ नौ बीवियों के घरों में पानी के सिवा खाने की कोई चीज न निकली।

एक दिन आप (सल्ल०) भूख के ठीक दोपहर को घर से निकल, रास्ते में हजरत अबूबक्र और हजरत अबू अय्यूब अन्सारी के घर में आए। उनको खबर हुई तो दौड़े आए और बाग में जाकर खजूर का एक गुच्छा तोड़ लाए और सामने रख दिया। इसके बाद एक बकरी जबह की और खाना तैयार किया और सामने लाकर रखा। हजरत (सल्ल०) ने कहा रोटी पर थोड़ा गोश्त रखकर कहा कि यह फातिमा के यहां भिजवा दो कि उसको कई दिन से खाना नहीं मिला।

हजरत (सल्ल०) की जब वफात हुई तो हालत यह थी कि आप की

जिरह (कवच) तीन सेर जौ पर एक यहूदी के पास गिरवी थी। जिन कपड़ों में आप की मौत हुई उनमें ऊपर नीचे पेवन्द लगे हुए थे।

हजरत फातिमा से आपको बड़ी महब्बत थी, लेकिन व मुहब्बत सोने चांदी के जेवरों और ईंट चूने के मकानों में कभी नहीं दिखती थी। हजरत फातिमा (रजि०) अपने हाथों से काम करती, मश्क भर कर पानी लातीं, आटा गूंधतीं और कभी बाप से किसी गुलाम या लौण्डी (दासी) की फर्माइश की तो कहा गया कि बेटी यह तस्बीह पढ़ लिया करो। एक बार जब बहुत से लौण्डी व गुलाम आए तो आप (सल्ल०) के पास जाकर सवाल किया हजरत (सल्ल०) ने कहा मेरी प्यारी बेटी ! बद्र के यतीम और सुफ्फा (चबूतरे) के मुसाफिर तुम से ज्यादा उनके जरूरतमन्द हैं।

आप (सल्ल०) कभी किसी का एहसास न लेते। हजरत अबूबक्र ने हिजरत के वक्त सवारी के लिए ऊंट दिया आप (सल्ल०) ने उसकी कीमत दे दी। जिन लोगों से तोहफा लेते थे उनको उसका बदला जरूर देते थे। एक बार एक आदमी ने एक ऊंटनी दी आप (सल्ल०) ने उसका बदला दिया तो उसको बुरा मालूम हुआ। आप (सल्ल०) मिम्बर पर खड़े होकर कहा तुम लोग मुझे तोहफा देते हो और मुझसे जहां तक हो सकता है उसका बदला देता हूं तो नाराज होते हो।

आप (सल्ल०) लेन–देन में बहुत साफ थे। कहा करते थे कि सबसे बेहतर वह लोग हैं जो कर्ज लिया जब वापस किया तो उससे अच्छा वापस किया। एक बार उसकी कीमत चुकता की।

जो वायदा करते पूरा करते कभी वायदा खिलाफी न की। हुदैबिया के समझौता में एक शर्त यह भी थी कि मक्का से जो मुसलमान होकर मदीना जाएगा वह मक्का वालों के मांगने पर वापस कर दिया जाएगा। इसी तरह वह सहाबी अबू जन्दल (रजि०) मक्का से भाग कर आए और मद्द चाही सभी मुसलमान यह देखकर तड़प उठे लेकिन आप (सल्ल०) ने साफ कह दिया कि अबू जन्दल सब्र करो, मैं वायदा के खिलाफ न करूंगा, अल्लाह तुम्हारे लिए कोई रास्ता निकालेगा।

आप (सल्ल०) की सच्चाई को दुश्मन भी मानते थे। अबूजहल कहा करता था मुहम्मद (सल्ल०) मैं तुम को झूठा नहीं कहता लेकिन जो कुछ तुम कहते हो उसको सही नहीं समझता।

आप (सल्ल०) शर्मीले बहुत थे, कभी किसी को बुरी बात न कही, बाजारों में जाते तो चुपचाप चले जाते भरी महफिल (सभा) में कोई बात अच्छी नहीं लगती तो जबान से कुछ न कहते लेकिन चेहरे से मालूम हो जाता। आप (सल्ल०) की तबियत में बहुत मजबूती थी जिस चीज का पक्का इरादा हो जाता फिर उसको पूरा ही करते। उहुद की लड़ाई में मुसलमानों से सलाह मश्वरा किया। सबने हमले की राय दी लेकिन जब हथियार सजा कर बाहर निकले तो रुक जाने को कहा– आप (सल्ल०) ने कहा अल्लाह का रसूल जिरह पहनकर उतार नहीं सकता।

तबियत में बहुत सादापन था। खाने–पीने, ओढ़ने, उठने बैठने किसी चीज में संकोच न था, जो सामने आ जाता वह खा लेते, पहनने के लिए जो मोटा झोटा मिल जाता उसको पहन लेते, जमीन पर, चटाई पर, फर्श पर जहां मिल जाता बैठ जाते। अल्लाह की नेअमतों से सही से फायदा उठाने की इजाजत आपने जरूर दी, लेकिन न पेट भरना और मजे उड़ाना अपने लिए पसन्द किया और न मुसलमानों के लिए। एक बार हजरत आइशा (रजि०) के पास गए देखा कि छत में पर्दा लगा है उसी वक्त फाड़ दिया और कहा कि अल्लाह ने हमको दौलत इसलिए नहीं दी कि ईंट पत्थर को कपड़े पहनाए जाएं। एक बार हजरत फातिमा (रजि०) के गले में सोने का हार देखा तो कहा कि तुम को बुरा न मालूम होगा जब लोग कहेंगे कि रसूल की बेटी के गले में आग का हार है।

दुनिया को न चाहने के साथ आप की तबियत का रूखापन पसन्द न था। कभी–कभी दिलचस्पी की बातें करते। एक बार एक बुढ़िया आप के पास आई और जन्नत की दुआ के लिए कहा–आप (सल्ल०) जवाब दिया बुढ़िया जन्नत में न जाएगी। उसको बहुत दुख हुआ रोती हुई वापस चली गई। आप (सल्ल०) ने लोगों से कहा उससे कह दो बुढ़िया जन्नत में न जाएंगी मगर जवान होकर जाएंगी। कुछ लोग नमाज रोजा में दिन रात लगे रहते थे इस वजह से बीवी बच्चे बल्कि अपने जिस्म का हक न पूरा होने का डर था इसलिए हुजूर (सल्ल०) उस से रोकते। हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र के बारे में पता चला कि उन्होंने हमेशा दिन में रोजा रखने और रातभर इबादत करने का अहद (प्रतिज्ञा) किया है। आप (सल्ल०) ने उनको कहला भेजा कि क्या यह खबर सही है? उन्होंने

कहा हां आप (सल्ल०) ने कहा– तुम पर तुम्हारे बदन का हक है, आंख का हक है, बीवी का हक है।

आप (सल्ल०) बहुत सावधानी बर्तते किसी के घर जाते तो दरवाजे के दाएं या बांए खड़े होते और उससे इजाजत मांगते। सामने इस लिए न खडे होते कि कहीं नजर न अन्दर पड़ जाए।

सफाई सुथराई का बहुत ध्यान रखते। एक आदमी को गन्दे कपड़े पहने देखा तो कहा इसे इतना नहीं होता कि कपड़ा धो लिया करे। बात ठहर–ठहर कर करते। जो बात नापसन्द होती उसको टाल जाते, ज्यादातर चुप रहते बेजरूरत बात न करते, हंसी आती तो मुस्कुरा देते।

आप (सल्ल०) हर पल अल्लाह की याद में लगे रहते। उठते बैठते, चलते–फिरते, हर पल उसकी खुशी ढूंढ़ते, और हर हाल में दिल व जबान से उसकी याद करते रहते। सहाबा की महफिलों (सभाओं) में और बीवियों की कोठरियों में होते, और अचानक अजान की आवाज आती, आप (सल्ल०) उठ खड़े होते। रात का बड़ा हिस्सा अल्लाह की याद में बसर होता, कभी पूरी–पूरी रात नमाज में खड़े रहते और बड़ी–बड़ी सूरतें पढ़ते, आप (सल्ल०) अल्लाह के बड़े प्यारे रसूल थे, फिर भी कहा करते मुझको कुछ नहीं मालूम मेरे ऊपर क्या गुजरेगी। एक बार बड़े असरदार शब्दों में कहा ऐ कुरैशियो! आप अपनी खबर लो, मैं तुम को खुदा से नहीं बचा सकता, ऐ अब्दे मुनाफ ! मैं तुमको खुदा से नहीं बचा सकता ऐ अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ! मैं तुमको भी खुदा से नहीं बचा सकता, ऐ मुहम्मद (सल्ल०) की बेटी फातिमा मैं तुमको भी खुदा से नहीं बचा सकता।

एक सहाबी (रजि०) कहते हैं कि मैं एक बार रसूल (सल्ल०) के पास आया देखा तो आप (सल्ल०) नमाज पढ़ रहे हैं आंखों से आंसू बह रहे हैं, रोते रोते हिचकियां बंध गई थीं मालूम हो रहा था कि चक्की चल रही है या हांडी उबल रही है। एक बार आप (सल्ल०) कब्र के किनारे बैठ गए और यह देखकर रोने लगे यहां तक कि जमीन भीग गई फिर आप (सल्ल०) ने कहा भाइयों ! इस दिन के लिए सामान कर रखो।

ऊपर आप (सल्ल०) के हालात व आप (सल्ल०) अच्छे अखलाक व व्यवहार और आदात को पढ़ चुके। अब कोशिश यह होनी चाहिए कि हुजूर (सल्ल०) की बताई हुई बातों पर हम चलें और अल्लाह की खुशी पाने का यही एक ढंग है और दीन व दुनिया की बादशाहत की सिर्फ यहीं कुंजी है।

अनुवाद : इरफान फारूकी नदवी

(पृष्ठ ३३ का शेष)

है। बस तू मेरा ईमान कबूल फरमा ले। अगले दिन मैंने सामान उठाया और रोड के नीचे डाल दिया।

एक साहब अपनी कार से किसी दोस्त से मिलने गये थे। मुझे रोड के नीचे बैठा देखकर कार रोकी और पूछा आप यहां क्यों पड़े हैं? मुझे शर्म आयी कि अल्लाह के सिवा किसी से अपना दुख क्यों बयान करूं। मैंने टलना चाहा लेकिन उन्होंने और जोर देकर मेरे बारे में जानने की कोशिश की। मैंने अपना हाल बताया तो बोले मेरी कोई औलाद नहीं है, आज से तुम मेरे बेटे हो।

उन्होंने मेरा सामान गाड़ी की डिग्गी में रखा और और अपने घर ले गये। वे मोतियों के बड़े ताजिर हैं।मैं ने बीकाम कर लिया था। छुट्टियों में जमाअत में चला गया। जमाअत में मेरा वक्त बहुत मुबारक गुजरा। वापस आकर एम०बी०ए० में दाखिला लिया। जिसके कम्पलीट करने का अमेरिकी कंपनी में असिस्टैंट मैनेजर की नौकरी मिल गयी।

अब मैं गुड़गांव में डयूटी करता हूं। मैंने पूर्वी दिल्ली में एक फ्लैट भी खरीद लिया है। मेरी शादी हो गयी है। मेरी बीवी पढ़ी लिखी और दीनदार है। अगले महीने हम दोनों मियां बीवी नेपाल जा रहे हैं। वहां मैं अपने रिश्तेदारों से मिलकर उन्हें इस्लाम की दावत देने की कोशिश करेंगे।

आशिक हूं दिल व जां से

मौ० मु० सानी हसनी

आशिक हूं दिल व जां से
रसूले अरबी का
मक्की मदनी हाशिमी
मुत्तलबी का
ऐ पाक नबी तेरी नजर
नूरे सहर है
काफूर हुआ जिस से फुसूं
तीरा शबी का
आंखों में सभी के है
तेरा हुस्ने सरापा
है जिक्र जबानो पे तेरी
खुश लकबी का

बच्चे की दावत से

वह मुसलमान बन गया

अकीदतुल्लाह कासिमी

यह उन दिनों की बात है जब असजद की उम्र आठ साल या इससे भी कुछ कम थी। असजद मौलाना कलीम सिद्दीकी का एक होनहार बेटा है जो इस्लाम की दावत के सिलसिले में बहुत मशहूर है। उनका मकान जामिया नगर ओखला में है। मकान के पास ही एक जनरल मर्चेंट की दुकान है जहां एक साहब नौकरी करते थे। वह नेपाल के काठमांडू के रहने वाले थे। २१ जुलाई १९८० को पैदा हुए थे। उनका ताल्लुक ब्राहमण परिवार से है। उनका बचपन का नाम विनोद कुमार था, मगर सब उन्हें गुड्डू कहते थे। उन्होंने शुरू की तालीम हाईस्कूल तक नेपाल ही में हासिल की। पिता की मृत्यु के बाद वे दिल्ली चले गये और एक दुकान में नौकरी कर ली और जामिया मिल्लिया इस्लामिया नयी दिल्ली में बी०काम में दाखिला ले लिया।

अजसद मियां पाबन्दी से पांचों वक्त मस्जिद में नमाज के लिए जाते थे । चलते–चलते दूसरे बच्चों से भी नमाज के लिए कहते जाते थे। इस लिए मुहल्ले के लोग उन्हें उनकी इस आदत पर अक्सर छेड़ते। उनके अपार्टमेंट में एक चौकीदार था। वह मुसलमान था मगर नमाज नहीं पढ़ता था। असजद मियां उससे भी नमाज के लिए कहते थे। एक दिन गुड्डू ने चौकीदार से पूछा : तुम रोजाना असजद से वादा करते मगर नमाज के लिए नहीं जाते? कुछ गुड्डू ने जोर दिया, कुछ असजद मियां ने जहन्नम से डराया तो वह नमाज को चला गया। अब उसने भी नमाज शुरू कर दी। हर नमाज से पहले असजद उसको लेने पहुंच जाते।

एक दिन वह जुहर की नमाज पढ़ने गया तो कोई उसके चप्पल चुरा ले गया। असजद मियां को पता चला तो वह अपने घर जाकर खूब रोया। बार–बार कहते थे। अब वह नमाज नहीं पढ़ेगा, वह समझेगा कि नमाज पढ़ने से नुकसान होता है। अम्मी! अगर आप पैसे दे दें और उसकी नयी चप्पल आ जाए तो वह हमेशा का नमाजी बन जाएगा। गरज किसी तरह उसने घर से पैसे लाकर उसको नयी चप्पलें दिला दी और कहा "देखो तुम्हें अल्लाह ने नमाज के बदले पुरानी चप्पल की जगह नयी चप्पलें दिला दी हैं।"

असजद मियां को मालूम नहीं था कि गुड्डू हिन्दू है। वह आते–जाते उसको सलाम कर लिया करता और गुड्डू भी जवाब दे दिया करता। अब असजद ने गुड्डू से भी कहना शुरू कर दिया "गुड्डू भाई ! आप दुकान पर बैठे रहते हैं, अजान सुनते हैं और नमाज को नहीं चलते? अजान सुनकर जो नमाज को न जाए मस्जिदा उसके लिए बद्दुआ करती है। गुड्डू कहते तुम नमाज को चलो मैं जरा देर से आऊंगा। दो चार हफ्ते इसी तरह गुजर गये। असजद रोजाना तकाजा करता, मगर गुड्डू उनको टाल देता। एक दिन अस्र के वक्त वह आकर चिमट ही गये "गुड्डू भाई आज मैं आपको लेकर ही जाऊंगा। तब गुड्डू ने कहा "तुम मुझे जानते नहीं हो। मेरा नाम विनोद कुमार है और मैं मुसलमान नहीं हिन्दू हूं।" यह सुना तो बोले "गुड्डू भाई! फिर तो आप के लिए बहुत मुश्किल बात है। आप तो बेनमाजी से भी ज्यादा खतरे में हैं। गुड्डू ने कहा "वह कैसे?कहा बेनमाजी तो दोजख में जलकर और अपनी सजा भुगत कर एक दिन जन्नत में चला जाएगा, मगर ईमान के बिना तो हमेशा जहन्नम में रहना पड़ेगा। गुड्डू भाई! आप जल्दी से कलिमा पढ़कर मुसलमान हो जाओ। इतने में जमाअत का वक्त हो गया तो गुड्डू ने पीछा छुड़ाते हुए कहा "असजद जाओ, तुम्हारी जमाअत निकल जाएगी।

वह बोले मेरी जमाअत निकल जाएगी और अगर आप की जान निकल गयी और इसी हाल में मर गये तो कितना बड़ा नुकसान होगा? गुड्डू कहते हैं, मैंने कहा अच्छा तुम नमाज पढ़ आओ। फिर बात करेंगे। वह नमाज को चला गया और आकर फिर दुकान के सामने खड़ा हो गया। ग्राहक आते रहे मगर वह अपनी बात कहता रहा। "गुड्डू भाई ! हम आपके यहां से सौदा लेते हैं आप से बहुत–सी बातें करते हैं। मैं कलिमा पढ़वाये बिना नहीं जाऊंगा।" मैं कहता रहा असजद तुम जाओ फिर किसी दिन बात करेंगे। वह बोले क्या पता आज ही मौत आ जाए

या मैं मर जाऊं। वह ज्यादा जिद करने लगे तो मुझे ख्याल आया यह नन्हा सा बच्चा है, बच्चे का दिल रखने में क्या हर्ज है? कलिमा पढ़ने से मैं मुसलमान थोड़े हो ही जाऊंगा। मैंने उसे टालने या दिल रखने के लिए कहा, "अच्छा कलिमा पढ़ाओ।" उसने कलिमा पढ़ाया तो मैंने हंसते हुए कलिमा पढ़ लिया। वह बोले गुड्डू भाई अब अपना मुसलमानी नाम रख लो। मैंने कहा क्या नाम बदलना जरूरी है? असजद ने कहा, अबू कहते हैं नाम बदलना जरूरी नहीं मगर अच्छा है, जब तुम ने कलिमा पढ़ लिया तो नाम भी बदल लो तो अच्छा है। अपनी पसन्द से कोई मुसलमान नाम रख लो। मैंने कहा मुझे तो तुम्हारा नाम अच्छा लगता है मैं तो असजद ही रखूंगा। बोले ठीक है असजद अच्छा नाम है इसके मायने हैं ज्यादा सजदे करने वाला। मैंने कहा फिर तुम्हें अपना नाम बदलना पड़ेगा। बोले मुझे क्यों बदलना पड़ेगा। एक नाम के बहुत लोग होते हैं।

मगरिब की नमाज का वक्त हो गया तो बोले अब तो तुम मुसलमान हो गये चलो नमाज पढ़ने। मैंने टालने की कोशिश की कि मेरे कपड़े गन्दे हैं नये कपड़े पहनकर आऊंगा जब चलूंगा। असजद नमाज पढ़ने चला गया और नमाज के बाद अपने अब्बू (मौलाना कलीम सिद्दीकी) की लिखी हुई किताब "आपकी अमानत आपकी सेवा में " लेकर आये और कहा असजद भाई। आप इस किताब को ध्यान से पढ़िये ताकि आपको मालूम हो जाए कि अल्लाह ने मुसलमान बनाकर आप पर कैसी मेहरबानी की है? मैंने किताब ले ली और सोचने लगा अजीब बच्चा है जोंक की तरह चिपक गया। लेकिन लगा जैसे किसी ने दिल के अन्दर से कहा कुछ तो बात है जो यह नन्हा–सा बच्चा ऐसी हमदर्दी और तड़प के साथ इस कलिमा और नमाज को कह रहा है मैंने तय कर लिया इस किताब को जरूर पढ़ूंगा।

मैं दुकान बन्द करके कमरे पर चला गया। खाना खाकर सो गया। ख्वाब में देखा कि आग का एक अलाव है उससे शोले उठ रहे हैं और लोग जल रहे हैं, आप की लपटें आसमान को छू रही हैं, कभी ऊपर को उठती है और कभी बैठ जाती है। लपटें इन्तिहाई खतरनाक हैं, इनमें बुरे लोग चीख चिल्ला रहे हैं। कुछ दूर पर खड़ा असजद कह रहा है गुड्डू भाई! यह दोजख है। जिससे अल्लाह ने आपको कलिमा पढ़वाकर बचा लिया। यह सुनकर मेरी आंख खुल गयी। मैं बयाान नही कर सकता इस आग का मुझ पर ऐसा खौफ तारी हुआ कि मैंने कमरे में सोये हुए साथियों की परवाह किये बगैर लाइट जलायी और "आपकी आमनत आपकी सेवों" पढ़ने लगा कई बार दिल ही दिल में कहा : असजद ! मेरे शुभ चिंतक असजद! तुम ने बहुत अच्छा किया। मुझे विनोद कुमार से असजद बना लिया।

ख्याल आया मैंने अस्र के बाद कलिमा पढ़ा है अब जो नमाजें मुझ पर फर्ज हैं वे मुझे जरूर पढ़नी चाहिए।

मैंने अपने कमरे के साथी फरीद को उठाया और कहा शाम छह बजे के बाद से मुसलमान कितनी नमाजें पढ़ा है ? उसने बताया दो मैंने कहा तुम मुझे नमाज पढ़वादो। उसने कहा सो जाओ, मेरी नींद खराब न करो, मगर मैंने खुशामद की उसके पांव दबाये तो उसको तरस आ गया उसने मुझे वुजू कराया और मगरिब व इशा की नमाज पढ़ाई। मैंने उल्टे सीधे रूकूअ सजदे किये।

अगली सुबह से मैं मस्जिद में जाना शुरू कर दिया। मेरे दुकान मालिक आम मुसलमान ताजिर थे। दो–तीन दिन बाद उन्होंने मुझे मस्जिद से आते देखा तो बोले अबे गुड्डू । तू मस्जिद क्यों गया था? यहां ग्राहक इन्तिजार कर रहे हैं। मैं खामोश रहा और नमाज के लिए जाता रहा। एक दिन इशा की नमाज पढ़कर आया तो वह बहुत नाराज हुए। अबे सुबह को मन्दिर में तो पूजा के लिए जाता नहीं, हिन्दू है अपने मन्दिर जा नापाक। मस्जिद क्यों जाता है? यहां दसियों चले गये। मैंने कहा साहब! अब मैं हिन्दू नहीं हूं मैं मुसलमान हो गया हूं। यह सुनकर मुझे मकान के अन्दर ले गये और कहा, "तू यहां साम्प्रदायिक दंगा कराएगा क्या?"

मैंने कहा यह इलाका मुसलमानों का है और मेरा घर नेपाल है फिर मेरा घर वालों से कोई ताल्लुक भी नहीं है। आप क्यों डरते हैं मैं मुसलमान हुआ हूं खुद रिस्क लूंगा। यह सुनकर वह और भी नाराज हो गये और कहा : "चला जा मेरे सामने से।" मेरा सामान कमरे से निकाल कर फेंक दिया। फरवरी की रात थी, रात को वर्षा भी हुई थी। मेरी सारी किताबें भीग गयीं। मैंने भी कोई साया तलाश नहीं किया। बस दिल ही दिल में फरियाद करता रहा। मेरे मालिक! मैं तेरा बन्दा हूं। तेरी बन्दगी में मुझे जान भी देनी पड़े तो मुझे मंजूर

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

उम्मत का क्या हाल है?

एक अल्लाह, एक रसूल और एक किताब को मानने वाली अल्लाह की पसंदीदा कौम आज जबरदस्त इंतेशर की शिकार है। यह कौम उस मजहब को मानने का दावा करती है जिस में दाखिल होने के बाद इंसान सारे भेदभाव, ऊंच नीच और गिरोहबन्दी से पाक हो जाता है और सिर्फ अल्लाह का फरमांबरदार बंदा होने का हक अदा करता है। लेकिन अफसोस इस्लाम की इतनी साफ–साफ तालिमात के बावजूद आज का मुसलमान आपसी इंतेशार के दलदल में पूरी तरह से धंस चुका है। अल्लाह के नजदीक सारे मुसलमान आपस में भाई–भाई हैं और सभी अल्लाह के बन्दे हैं लेकिन ठीक इसके बरखिलाफ मुसलमानों का अमल देखने में आ रहा है। जिधर भी नजर उठाइये हर तरफ मुसलमान हसद व जलन का शिकार है। अपने आपको मुसलमान कहने पर फख महसूस करने वाला ये अल्लाह का बन्दा अब २४, २६, वहाबी, देवबंदी, बरेलवी, शिया सुननी अहले हदीस, हनफी और शाफई कहलाने का फख महसूस कर रहा है। सारे जहानों में रब को राजी करने के लिए उसने अपने गले में मुसलमान होने की तख्ती डाल रखी थी, उस पर मजहब के ठेकेदारों ने अपने–अपने मसलकों और नम्बरों की तख्ती लगा दी है और वो मासूम खुशी के साथ इसे नेकी समझकर अपनाते जा रहे हैं। इंतेशार ने इतने पैर फैला लिए हैं कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को मुसलमान मानने से इंकार करने लगा हे। बात यहीं खत्म नहीं हो रही बल्कि वह उसे (जो बिला शुबहा अल्लाह का कलमा पढ़ने वाला है) इस्लाम का दुश्मन तक बता रहा है। उससे सारे ताल्लुकात खत्म करने की बात की जा रही है। उसे ज़ालिम और मरदूद घोषित किया जा रहा है। गले में लगी तख्तियां अब अल्लाह के घरों पर भी लगने लगी हैं। अल्लाह के घर भी अब नम्बरों, मसलकों और जमातों के आधार पर बांटे जा रहे हैं। मस्जिद भी अब अल्लाह का घर नहीं बल्कि जमातों और मसलकों का दफतर बन चुकी है। अफसोस इस बात का है कि नासूर बन चुके इस आपसी इंतेशार पर किसी की नजर नहीं जाती, और अगर किसी की नजर गई भी तो वह नीची कर दी जाती है या उसकी आंखों में यह नजारे समा नहीं पा रहे हैं। असल में उम्मत का तकरीबन हर शख्स इस गिरोह बन्दी का शिकार हो चुका है और अगर कुछ जीहोंश लोग इससे बचे हुए हों तो उनके पास कोई प्लानिंग या मंसूबा नहीं है, जिससे वह इस इंतेशार के खिलाफ जिहाद छेड़कर इस पर फतेह हासिल कर सकें। अल्लाह के रसूल हजरत मोहम्मद ने हमेशा उम्मत के इत्तेहाद पर जोर दिया और अल्लाह भी उन मुसलमानों को पसंद नहीं करता जो अपने ही बनाए हुए खानों में तकसीम हो गए हैं। दुनिया की छोटी से छोटी कौम तरक्की की नई–नई इबारतें लिख रही हैं और हम वहीं के वहीं हैं बल्कि पीछे की तरफ जा रहे हैं। हमारे दिलों में गुंजाइशें खत्म हो रही हैं। इस्लाम के दुश्मनों से मुस्कुराकर और प्यार से बात करने को तैयार है लेकिन अल्लाह के बन्दे व अपने मुसलमान भाई से नहीं। यह कैसा गन्दा जुनून है? जो मुसलमान को मुसलमान का दुश्मन बना रहा है। यह कौनसी नफरत है? जो हम अपने बच्चों के बस्तों में डाल रहे हैं। यह कौन से इस्लाम की हम तबलीग कर रहे हैं? जो एक भाई को भाई का दुश्मन बना रहा है। अगर हमारा रवैया नहीं बदला तो याद रखिएगा, मुस्तकबिल में हमारी नस्लें सड़कों पर अपना–अपना दीन लिए खड़ी होंगी और इस का कोई जिम्मेदार होगा तो वो हम और आप होंगे। इन इख्तेलाफात को उखाड़ फेंकिए, अपने सीनों पर लगी नम्बरों की तख्तियों को नोच डालिए सिर्फ व सिर्फ मुसलमान के तौर पर अपनी शिनाख्त बाकी रखिये क्योंकि अल्लाह के सामने कामयाब होने वाली शिनाख्त सिर्फ मुसलमान होने की शिनाख्त है न कि देवबन्दी, बरेलवी या अहले हदीस की। इतने टकराव में गुजर रहे वक्त में भी हम मुनज्जम नहीं होंगे तो फिर शायद कभी नहीं हो पाएंगे। हमारा ये इंतेशार हमारी सबसे बड़ी कमजोरी बन चुका है। अब जरूरत है अपने आपको पहचानने की और अपने अन्दर सही इस्लामी फिक्र पैदा करने की दुनिया में सही जिन्दगी गुजारने की, तभी कहीं जाकर हम मुसलमान होने का हक अदा कर सकेंगे।

सम्पादक के नाम एक खत

मोहतरमी जनाब अस्सलाम अलैकुम

मैं आपके महाना सच्चा राही का खरीदार हूं। इस शहर में वो मुझे मौ० खुर्शीद कासमी साहब से मिलता रहता हैं। मैं बहुत अर्से दराज से एक खतके जरिये मेरे खयालात का इजहार करना चाह रहा था, आज जुलाई ०७ का रिसाला पढ़ने के बाद लिखने बैठ गया हूं दीनी रिसालो में जो हिन्दी में छपते हैं उससे सच्चा राही एक मियारी और इल्मी है। लेकिन मुख्तलिफ मजामीन जो होते हैं उसको लिखते वक्त हिन्दी या उर्दू देवनागिरी एक यूनीफार्म तरतीब नहीं रहती मसलन एक मजमून एडीटोरियल में डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी साहब का जो उर्दू के साथ हिन्दी में ब्रकेट में दिये वो सही तरीका है। कुरआन की शिक्षा में कुर्आन की तालीम (शिक्षा) इस तरह बेहतर होता एक प्रिंससिपल इख्तियार कीजिए हर मजामीन उर्दू देवनागिरी में ही पढ़ने को और समझने को अच्छे लगते हैं, दीनी मदारिस के बुनियादी फराइज ये सिर्फ मुसलमानों के लिए होने के बावजूद उस हिन्दी में लिखकर ब्रेकेटमे उर्दू देवनागिरी में लिखा गया है यह बड़ा अटपटा और अजीब सा लगता है। हमें अगर ऐसा लगता है कि ये गैरमुस्लिम हजरात के पढ़ने के लिए है तो यह सोच अच्छा तो लगता है मगर मेरा तजुर्बा और तजजीया ये है कि हमारे भाइयों में दीनी मुताअलेका कितना शौक पाया जाता है। हमारे रिसाले दीनी अखबार बड़े कसमपुर्सी के हालात में चलाये जाते हैं।

मेरी दरख्वास्त का मोअदबाना गुजारिश कहो कि, पूरा सच्चा राही आप उर्दू देवनागरी में शाया करें और हिन्दी अलफाज ब्रेकेट में लिखे वरना रिसाला एक यूनीफार्म पोजीशन में नहीं नजर आता लेहाजा आप मेरे इजहारे ख्याल पर गौर करके एक यूनीफार्म पोजीशन रिसाला पेश करें। अल्लाह से दुआ है कि वो इसी कलमी जरीये से दावते दीन के मकसद में कामयाबी अता करे।

सम्पादक :

व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातु

आप का खत मिला, रिसाले का मकसद सच्ची पक्की बात अपने पाठकों तक पहुंचाना और उन को सच्चा पक्का मुसलमान बनाने की रहनुमाई करना है, इस में हम कितने कामयाब हैं हम को खुद नहीं मालूम है, रही बा रस्मुल खत की तो यह कौम का लिहाज करते हुए देव नागरी में तो है ही, रहे उर्दू, अरबी, फारसी और हिन्दी अलफाज का इस्तिअमाल तो इस सिलसिले में हम बराबर घोषित करते रहते हैं कि हमारे लेखक सरल लिखें, रही बात उन के तर्जे तहरीर की तो वह तो हमारा काम मुफ्त करते हैं, हम उनको किसी शैली का पाबन्द नहीं बना सकते बल्कि वह जो कुछ लिखेगे अगर मजमून हमारी पालीसी के खिलाफ न होगा तो शुक्रिये के साथ छापेंगे। अब आप का खत ही है इसमें कई गलतियां हैं। फिर भी आप का बहुत बहुत शुक्रिया।

सम्पादक

पिछले पृष्ठ पर छपा मजमून हमारे किसी पाठक ने भेजा लेखक का नाम भी नहीं है लेकिन मजमून को अहम समझते हुए छाप दिया गया।

सच्ची बात यही है कि न हम हनफी हैं न मालिकी न शाफई, न हंबली, न चिश्ती न कादिरी, न मुजद्दिदी न सुहर वरदी न सय्यिद न शैख न मुगल न पठान, हम तो सिर्फ और सिर्फ मुसलमान हैं, और हकीकत यह है कि इन में से कोई भी ऐसा नहीं जो अपने को मुसलमान न कहलाता हो, यह जिमनी नाम तो इस्लाम सिखाने वाले उस्तादों के हैं इसी तरह अपने मुरब्बियों की निसबत से चिश्ती, कादिरी हो गये, और कबाइल की निस्बत से शैख पठान हो गये और सभी मुसलमान हैं। रहा अब इन जिमनी लेबिलों को हटाया जाना तो, यह तो कियामत तक हटाया जाना मुम्किन नहीं ना ही इन से कोई खास हरज है। हरज एक दूसरे की बेजा तफ्सीक, तकफीर और तहकीर और पारसपरिक फूट में, इत्तिहाद बैनल मुसलिमीन पर काम करते नदवे को एक सदी से जियादा हो चुका लेकिन शायद यह इख्तिलाफात भी हमारा मुकद्दर हो चुकी हैं। रहे शीआ सुन्नी इख्तिलाफ तो उस को भी हम बहुत हद तक निबाह रहे हैं लेकिन जरा सोचें जो खुलफाए सलासा को इस्लाम से खारिज बताए और कुर्आन में तहरीफ मानें बताइये उस से कैसे निभाएं ? रहे बरेलवी और देवबन्दी तो जब तक यह अपने बड़ों के इल्जामात दोहराते रहेंगे, समझने की कोशिश नहीं करेंगे यह झगड़ा भी दूर होने का नहीं, मेरा अपना मस्लक तो यही है। तू बराये वस्ल करदन आमदी।

सेक्स एजूकेशन

या बेहयाई फैलाने की साजिश

एम०एच० खां

अभी तक तो टीवी फिल्मों तथा विज्ञापन के सीन देखकर बड़े–बूढ़े अश्लीलता का रोना रो रहे थे कि परिवार के साथ ऐसे भावुक चित्रों को देखने में शर्म से आंखें बन्द कर लेनी पड़ती है। विकास के नाम पर खूबसूरती बढ़ाने के चक्कर में महिलाओं के कपड़े उतार कर कॉलेजों को रोमांस अड्डे बनाने से जी नहीं भरा। अब एड्स की आड़ में माध्यमिक स्तर के कोर्स में सेक्स शिक्षा शामिल किये जाने की तैयारी चल रही है। अब ज्ञान प्राप्त करने के बजाए युवापीढ़ी केवल सेक्स–समुद्र में गोता लगाती फिरेगी और समाज में बेहयाई को बढ़ावा मिलेगा। एड्स की रोकथाम के लिए समाज में फैली बुराइयों को दूर करने की जरूरत है।

मनोरंजन के नाम पर खुल्लम खुल्ला अश्लीलता परोसी जा रही है। जिस पर युवा वर्ग में सेक्स के प्रति उत्तेजना पैदा होना स्वाभाविक है। वह काम भावुकता से मजबूर होकर तमाम उल्टे–सीधे साधन अपनाने लगते हैं। जिससे समाज में दुराचार की घटनाएं बढ़ती ही जा रही हैं। ऐसे में एड्स जैसी घातक बीमारी का होना सम्भव है।

यह तथ्य बिल्कुल सच है कि एड्स एक खतरनाक और लाइलाज बीमारी है जो देश में दिन दूनी रात चौगुनी अपना पैर पसारती ही जा रही है जिससे भावी पीढ़ी को बचाना बहुत ही जरूरी है और समझदारी की बात है लेकिन इसके पैदा होने की अस्ल वजह को पहले तलाश करना होगा। उसके बाद दूर करने का उपाय किया जाना अधिक उचित जान पड़ता है। एड्स के प्रचार–प्रसार से आमतौर पर जानकारी मिल रही है कि इसके फैलने व पनपने का मूल कारण अप्राकृतिक यौन सम्बन्ध है तो क्यों न उस बुराई को पहले दूर करने पर विचार किया जाए और कारगर उपाय अपनाये जायं।

होम साइंस में मानव शरीर रचना के बाबत सब कुछ भारतीय सभ्यता के तहत पढ़ाया जा रहा है। फिर अलग से सेक्स एजूकेशन के नाम पर जननांगों के विषय में पढ़ाया जाना कहां तक उचित है।

सच तो यह है कि इन अंगों को अश्लीलता के साथ परोसना है। जिसका नतीजा साफ है कि युवा–वर्ग कम व कच्ची उम्र में ही सेक्स से परिपक्व होकर समय से पहले ही सेक्स के प्रति भावुक बन जाएंगे। कच्ची समझ होने के कारण सेक्स हमेशा उनके सिर पर सवार रहेगा। जिसके चलते युवा वर्ग यानी आने वाली नस्ल अशलीलता के समुद्र में कूद पड़ेगी और खास तौर से पवित्र लड़कियों को परीक्षा में डाल देगी जब कि अल्लाह की नेक बन्दियां बड़ी गैरत वाली हैं। अगर कभी (खुदा न करे) उनकी इज्जत पर हमला होता है, तो वे अपनी जान पर खेल कर अपनी आबरू बचाती हैं।

मुसलमानों के एक देश तुर्की का नाम तो तुमने सुना ही होगा। तुर्की हमारे देश से दूर , बहुत दूर पश्चिम में यूरोप से मिला हुआ एक देश है। वहां के मुसलमान हाकिमों में जब तरह–तरह की कमजोरियां पैदा हुईं तो यूरोप वालों ने हमला करके उसे हड़प करना चाहा।

एक बार दुश्मनों की एक फौज ने तुर्की के एक गांव पर हमला किया, इत्तिफाक से मर्द सब लड़ाई में थे। इन जालिमों ने परदे वाली बीवियों और लड़कियों और बच्चियों को कत्ल करना शुरू किया। एक फौजी एक घर में घुसा, वहां एक औरत को एक बच्चा पैदा हुआ था। वह बेचारी जच्चा खाने में थी और बच्चा उसके पास ही सो रहा था। उस जालिम ने घुसते ही बच्चे को मा के सामने ही मार डाला। वह बेचारी ममता की मारी तिलमिला कर रह गयी। उसके बाद जालिम ने उस औरत की इज्जत पर हमला करना चाहा, बोला : मैं तुम्हें बीवी बना कर रखूंगा।'' उसके जिगर के टुकड़े को अभी अभी कल किया गया था, जिसकी खून में लथड़ी हुई लाश उसके सामने थी, लेकिन इस पर भी मजबूरन सब्र किया था, अब जो फौजी की यह बकवास सुनी तो वह गैरतमंद बीवी आगबबूला हो गयी। यह बेइज्जती उसे बर्दाश्त न थी, मगर लहू का घूंट पीकर चुप रही और मौके का इंतिजार करने लगी। इत्तिफाक से उस फौजी को पाखाने की जरूरत हुई। फौजी ने हथियार खोल कर रख दिया, और पाखाने चला गया। औरत ने हथियार पर कब्जा कर लिया और जैसे ही फौजी वापस लौटा तो उसने अचानक हमला करके फौजी को मार डाला और इस तरह अपनी आबरू बचा ली।

●●●

गुर्दे की पथरी और उसका उपचार

गुर्दे, आपकी कमर के ऊपर आपकी पीठ के दोनों किनारों पर स्थित मुट्ठी के आकार के अंगों का एक जोड़ा है, जो पसलियों से सुरिक्षत होते हैं। गुर्दे शरीर के कुशल रसायन विशेषज्ञों के रूप से जाने जाते हैं। शरीर में इनके कार्य हैं।

❖ वे शरीर के जल अंश और रसायनों को संतुलित करते हैं।

❖ वे रक्त से अपशिष्ट उत्पादों को हटाते हैं।

❖ वे ऐसे विभिन्न हॉर्मोनों और रसायनों का उत्पादन करते हैं जिनसे लाल रक्त कोशिकाओं का निर्माण में मदद मिलती है।

❖ वे शरीर को विटामिन–डी, जो आपकी हड्डियों को मज़बूत और स्वस्थ बनाये रखता है, का प्रयोग करने में मदद करते हैं।

❖ वे आपके रक्त–चाप को नियंत्रण में रखते हैं।

मूत्र संबंधी प्रणाली में, दो गुर्दो एवं मूत्र वाहिनियां, मूत्राशय और मूत्रमार्ग शामिल होते हैं। गुर्दे–रक्त से अपशिष्ट उत्पाद हटाते हैं, मूत्र वाहिनियां इन अपशिष्ट उत्पादो को गुर्दों से मूत्राशय तक मूत्र के रूप में ले जाती हैं, मूत्र–मार्ग–अंततः शरीर से मूत्र को बाहर निकालता है।

गुर्दे की पथरी एक ठोस किस्टल पिंड होती है, जो मूत्र से छूटने वाले किस्टलों अथवा छोटे कणों से विकसित होकर गुर्दे के अन्दर बनती है।

गुर्दे की पथरियां अलग–अलग आकार की होती हैं और ये रेत के कण के समान छोटी अथवा टेनिस बॉल जैसी बड़ी भी हो सकती हैं। पथरी, मूत्र संबंधी प्रणाली के किसी भी क्षेत्र में बन सकती हैं।

गुर्दे की पथरी बनने में कौन से घटक सहायक होते हैं ?

गुर्दे की पथरी बनने में कई घटक सहायक होते हैं :

❖ मूत्र संबंधी प्रणाली के किसी भी क्षेत्र में बार–बार होने वाले संकमण।

❖ बहुत ही कम द्रव (तरल) पीना।

❖ मूत्र संबंधी प्रणाली के मार्ग का अवरूद्व हो जाना।

❖ आहार में अत्यधिक कैल्सियम, मोटा मांस (रेड मीट) विटामिन–सी का उपयोग करना।

❖ अधिक मूत्र लाने वाल अथवा कैल्सियम आधारित अम्लनाशकों जैसी दवाइयां लेना।

❖ चयापचयी विकार, जैसे हाइपरथाइरॉयडिज़्म (अवटु अति–क्रियता)

❖ पीठ के निचले हिस्से में अथवा पेट के निचले भाग में अचानक तेज़ दर्द, जो पेट एवं जांघ के संधि क्षेत्र तक जाता है (जब कोई पथरी मूत्र संबंधी प्रणाली के द्वोत्र में इधर–उधर घूमती है)। यह दर्द कुछ मिनटां या घंटों तक बना रहता है तथा इसके बाद बीच–बीच में आराम मिलता है।

❖ दर्द के साथ जी–मिचलाने तथा उल्टी होने की शिकायत भी हो सकती है। यदि मूत्र संबंधी प्रणाली के किसी भाग में संकमण भी है, तो इसके लेद्वाणों में बुख़ार कंपकंपी, पसीना आना तथा पेशाब आने के साथ–साथ दर्द होना शामिल हो सकते हैं।

❖ मूत्र में रक्त भी आ सकता है।

❖ मूत्र संबंधी प्रणाली के किसी भाग में संकमण के लक्षण, जैसे पेशाब करते समय जलन, बार–बार पेशाब करने की इच्छा तथा धब्बेदार अथवा दुर्गंध वाला मूत्र।

गुर्दे की पथरी से जुड़ा दर्द असहनीय होता है। पथरी से, गुर्दों कार्य करना बंद कर सकते हैं जिससे जान को खतरा हो जाता है । गुर्दों को अवरूद्व करने वाली पथरी के कारण दर्द हो सकता है। जब अवरोध नहीं हटाया जाता है, तो कुछ दिनों में दर्द कम हो सकता है जिससे पीड़ित व्यक्ति यह सोचता है कि संकट समाप्त हो गया है, जबकि वास्तव में अवरूद्व गुर्दो बंद हो जाता है। यदि इसका उपचार नहीं किया जाता हे तो इससे गुर्दा स्थायी रूप से ख़राब हो सकता है।

८० लाख लोग पथरी के रोग से पीड़ित हैं, हरियाणा–पंजाब में कैल्सियम युक्त पथरियां पायी जाती हैं क्योंकि उनका खान–पान कुछ उस तरह का होता है। राजस्थान में स्थिति कुछ अलग है, तो केरल, महाराष्ट्र के सौ राष्ट्र के इलाक़े में स्थिति अलग

है।

सम्पूर्ण चिकित्सा जांच, एक्स–रे अथवा सोनाग्राम, डाई इंजेक्शन अथवा अल्ट्रासाउंड परीक्षणों से गुर्दे की पथरियों का रोग–निदान किया जाता है।

होम्योपैथिक चिकित्सा काफ़ी कारगर है

आज पथरी के इलाज की कई तकनीकें उपलब्ध हैं इनमें सबसे बेहतर लिथिट्रिप्सी है–इसका नवीनतम इलाज है आपरेशन ! लेकिन यह आपरेशन चीरा लगाकर करने वाला कोई आपरेशन नहीं है। लिथोट्रिप्सी नामक नयी तकनीक द्वारा आठ सेंटीमीटर तक की पथरी को चूरा करके बाहर निकाला जा सकता है। इस विधि में गुर्दे और यूरेटर की पथरी को बिना आपरेशन, बिना बेहोशी और दर्दरहित इलेक्ट्रोमैग्नेटिक शॉक वेव्स द्वारा तोड़ा जाता है। पथरी बारीक कणों में टूटकर पाउडर बन जाती है और ये कण अपने आप पेशाब के साथ–साथ शरीर से बाहर निकल जाते हैं। समस्त कण निकलने में आठ–दस सप्ताह लग सकते हैं, परंतु इसके लिए मरीज को अस्पताल में भर्ती होने की ज़रूरत नहीं पड़ती और वह लिथोट्रिप्सी के तुरंत बाद घर या ड्यूटी पर जा सकता है। लिथोट्रिप्टर मशीन का संचालन रिमोट कंट्रोल द्वारा होता है।

लिथोट्रिप्सी के साथ–साथ इसमें एक्स–रे की भी सुविधा होती है। इस मशीन के मुख अंगों में एक शॉक वेव हेड, सी–आर्म,एक्स–रे मॉनीटर ट्रॉली, अल्ट्रासाउंड पद्वति और मरीज के लेटने के लिए एक मेज होती है। जब भी किसी रोगी का आपरेशन इस लिथोट्रिप्टर द्वारा करना होता है तो उसे मेज पर लिटा दिया जाता है। तुरंत ही माफनीटर पर उसके पेट का एक्स–रे आ जाता है। 'सी आर्म इंटीग्रटेड' स्वचाकिलत विधि से केवल पथरी के ऊपर ही शॉक–वेव्स को केन्द्रित कर देता है और पत्थर कुछ ही देर मे टूटने लगता है। यह सारी प्रकिया मॉनीटर लेज़र से पथरी का इलाज संभव हो गया है।

इससे सबसे ज्यादा आसानी प्रोस्टेट के इलाज में हुई है। वास्तव में प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ना, प्रौढ़ आयु के पुँरूषों की एक आम समस्या है, लेकिन जितनी यह आम समस्या है, उतनी ही परेशान करने वाली भी। इससे होने वाली तकलीफ़ को तो कोई भुक्त भोगी ही जान सकता है। लेकिन नवीनतम खोज, होलमियम लेज़र चिकित्सा के द्वारा इस बीमारी का स्थायी हल ढूंढ़ लिया गया है। वह भी बिनाकिंसी चीर–फाड़, खूनख़राबा और दुष्प्रभावों के। इसके इलावा कई और तकनीकें इस्तेमाल में लायी जाती हैं जैसे–

होलमियम लेजर : यूटेटर या उसके ऊपर के स्टोन को लचीले यूरोटोस्कोप से पथरी तक पहुंच कर लेजर द्वारा इसके आसानी से ख़त्म कर दिया जाता है।

इंडोयूरोलोजी : जब पथरी बहुत भारी या सख़्त होती है, तो गुर्दे के हिस्से में दूरबिन द्वारा एक छोटा–सा छेद तक कर पत्थर तक पहुंच कर लिथोक्सालस्ट या लेजर चूरा करके गुर्दे को साफ़ कर देते हैं और सारी पथरियां बड़ी से बड़ी निकाल दिया जाता है। स्टैग होर्न पथरी के लिए ये तकनीक सबसे बेहतर है।

हदीसे रसूल सल्ल०

मशक से मुंह लगाकर पानी पीना अनुचित है

हजरत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इससे रोका कि मशक या छोटी मशक से मुंह लगाकर पानी पिया जाए। –बुखारी, मुस्लिम

पेय में फूंक मारना अनुचित है

हजरत अबू सईद अल–खुदरी (रजि०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने पेय में फूंक मारने से रोका। एक व्यक्ति ने कहा : मैं बर्तन में खर–पतवार आदि देखूं तो? आपने कहा : 'उड़ेलकर उसे बाहर कर दो।'' उसने कहा : एक सांस में मेरी प्यास नहीं बुझती। तो आपने कहा : ''प्याले को अपने मुंह से अलग कर दो। (और सांस ले लो)।'' – तिरमिजी । तिर्मिजी ने कहा कि यह हदीस हसन सहीह है।

खड़े होकर पानी पिया जा सकता है किन्तु बैठ कर पीना उत्तम है।

हजरत उमर (रजि०) से रिवायत है कि वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के समय में चलते–फिरते भी खा लेते और खड़े होकर पानी पी लेते थे।

– तिरमिजी । तिर्मिजी ने कहा कि यह हदीस हसन सहीह है।

हजरत उम्र बिन शुऐब अपने पिता से और वे उनके दादा (अर्थात पिता से) रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को खड़े होकर भी पानी पीते देखा है और बैठकर भी। .

– तिर्मिजी । तिर्मिजी ने कहा कि यह हदीस हसन सही है।

उर्दू का विरोध करने वालों को लताड़ा था गांधी जी ने

अपनी हत्या से १६ दिन पहले लिखे एक पत्र में गांधी जी ने उर्दू का विरोध करने वालों को फटकार लगाते हुए कहा था कि वे 'पाकिस्तान की ग़लत आदतों की बदले की भावना से नक़ल न करें। उन्होंने इस बात की पुरज़ोर पैरवी की थी कि उर्दू को देवनागरी के साथ संयुक्त रूप से राष्ट्रीय लिपि के तौर पर स्वीकार किया जाना चाहिए।

इस ऐतिहासिक और दुर्लभ पांडुलिपि की ३ जुलाई को लंदन के किस्टी मैं नीलामी होनी थी जिसे रोक दिया गया। गांधी जी ने कहा कि उर्दू। का विरोध करने से मुसलामानों के प्रति विद्वेष की भावना भड़केगी जो 'हिन्दुओं' की नज़रों में अपनी ही ज़मीन पर पराये हो गये हैं।' ऐसा प्रतीत होता है कि गांधी अपने अख़बार 'हरिजन' के उर्दू संस्करण के गिरती प्रसार संख्या को लेकर काफ़ी विचलित थे। ११ जनवरी १९४८ को अपने अख़बार में उन्होंने लिखा कि इसका प्रकाशन बन्द होने की संभावना है।

उर्दू की तारीफ़ करते हुए उन्होंने कहा 'जो लोग इस भाषा को सीखते हैं' वे कुछ खोएंगे नहीं बल्कि कुछ पाएंगे ही। ' उन्होने यह भी कहा कि उर्दू दम नहीं तोड़ेगी, कम से कम अरबी और फ़ारसी के बने रहने तक। इस भाषा ने बिना किसी बाहरी मदद के खुद अपने आप एक दर्जा हासिल किया है। थोड़े–बहुत रददोबदल के साथ यह शार्टहैंड का काम करने में भी समर्थ है। गांधी जी ने कहा कि अगर एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में इसे रूढ़िवादिता के बंधनों से मुक्त किया जाता है तो यह अपने में इतना सुधार करने में समर्थ है कि कोई बिना किसी परेशानी के संस्कृत के श्लोकों को इस भाषा में अनूदित कर सकता है।

हालांकि साथ ही उन्होंने मुसलमानों से भी अपनी 'बौद्धिक संपदा' को और समृद्ध बनाने के लिए देवनागरी सीखने की गुज़ारिश की और कहा कि वे हरिजन खरीदें। अंत में गांधी जी ने कहा 'क्या मुस्लिम मित्र मौक़े पर ख़रा उतर कर हरिजन के उर्दू संस्करण को ख़रीदने और देवनागरी लिपि का सीखने के दो अहम काम करेंगे ?'

(पृष्ठ ४० का शेष)

किए जाए सहित अन्य कार्यों के लिए लगभग ५० लाख रुपए दिए गए। जिलों से जो संकेत आ रहे हैं, उससे साफ दिखाई पड़ रहा है कि जितना चुनाव खर्च सोचा गया था, उससे अधिक खर्च हुआ है ऐसी स्थिति में जिलों को अलग से १००० से १५ करोड़ रूपए जारी करेन होंगे। इस बार के चुनाव में लगभग ६५० कम्पनी केन्द्रीय बल तैनात किए गए थे। इसके अलावा दूसरे राज्यों का बल तथा प्रदेश पुलिस व पीएसी बल भी तैनात था। इन बलों के मूवमेंट, ठहरने, खाने–नाश्ते आदि पर ही लगभग एक अरब रुपए का खर्च आ रहा है। अधिकारिक सूत्रों के अनुसार पहले चरण के चुनाव से लेकर मतगणना तक इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनों की चौकसी में काफी बड़ी धनराशि खर्च हुई। इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनों की निगरानी केन्द्रीय बलों के हवाले थी। लिहाजा, केन्द्रीय बलों पर आने वाला खर्च भी बढ़ता चला गया।

इस्लामी दुनिया में हलाल आहार, पेय पदार्थ की मार्केटिंग पर बल

मेलेशिया की राजधानी कोलालमपुर की एक तीन दिवसीय इस्लामिक अन्तर्राष्ट्रीय नुमाइश में १४ देशों के १०० से अधिक इस्लामी तिजारती घरानों ने भाग लिया। इस नुमाइश का उद्देश्य मुस्लिम उपभोक्ताओं (सारिफीन) की हलाल और जाएज चीजों की मांग को पूरा करने के लिए मार्केटिंग को बढ़ावा देना था। इस मेले में हलाल पोष्टिक आहार से लेकर अन्य हलाल खाद्य पदार्थ रखी गई थीं। वर्तमान युग में विभिन्न मुस्लिम क्षेत्रों से यह मांग रखी जा रही है कि पिप्सी और कोको कोला के स्थान पर जाइज इस्लामी पेय पदार्थों को पेश किया जाए। मुस्लिम व्यापारियों और उद्योग पतियों ने इस्लामी सिद्धान्तों, स्वास्थवर्धक तैयार की गयी हलाल चीजों पर अधिक ध्यान दिया। एक अनुमान के अनुसारा हलाल आहार की सालाना बिक्री ५०० बिलियन डालर से १००० बिलियन डालर तक है। ऐसा मालूम होता है कि मुस्लिम धर्म इस क्षेत्र में भी अपना स्थान बनाना चाहती हैं।

डॉ० एस० अब्दुल्लाह (मलेशिया इस्लामिक मीडिया) ने बताया कि यह मुसलमानों की जिम्मेदारी है कि वह अपनी क्षमतानुसार पूरे संसार की अच्छी से अच्छी जाइज पेय वस्तुएं उपलब्ध कराएं।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

गेट्स ने कहा, इराक को कम करके आंका

आबूधाबी । अमेरिका को बहुत देर से यह बात समझ में आयी कि इराक को कम करके आंका और उसकी नीतियां बगदाद में फ्लाप रही हैं। अमेरिकी रक्षा मंत्री राबर्ट गेट्स ने कहा कि शायद वाशिंगटन ने इराक की राजनीतिक समस्या को गंभीरता से नहीं लिया। गेट्स के अनुसार, उन्हें उम्मीद थी कि इराक में अमेरिकी सैनिकों की संख्या बढ़ा देने से वहां के हालात में सुधार होंगे। लेकिन इराक के मामले में सब उल्टा हो गया। गेट्स का कहना था कि हम सभी ने यहां की राजनीतिक समस्या को कम करके आंका था और यहां की राजनीतिक पार्टियों को किसी विधेयक पर एक साथ लाना काफी कठिन काम है। उन्होंने कहा कि इराक मामले में अमेरिका दरअसल अंधेरे में रहा और वह वहां की जर्मनी हकीकत से वाकिफ नहीं था।

२०५० तक देश में आधा रह जाएगा गेहूं उत्पादन

वर्ष २००५ में हिमालय के औसत तापमान में ४ डिग्री सेल्सियत की वृद्धि होगी। बंगाल की खाड़ी के औसत तापमान में भी २ डिग्री की बढ़ोतरी होगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार जलवायु में इस प्रकार का परिवर्तन मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत बड़ा खतरा साबित होने जा रहा है। संगठन का कहना है कि तापमान वृद्धि का न केवल स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा, बल्कि गरीब देशों में अनाज के उत्पादन में भी कमी आएगी और कुपोषण बढ़ेगा। वर्ष २०५० तक भारत में सूखे के कारण गेहूं के उत्पादन में ५० प्रतिशत तक की कमी हो जाएगी। इससे २० करोड़ लोग भुखमरी के कगार पर होंगे। डब्ल्यूएचओ के सूत्रों के अनुसार वातावरण में औद्योगिक काल से पहले की तुलना में कार्बन डाई आक्साइड का संकेन्द्रण ३० प्रतिशत ज्यादा हुआ है। आग जलाने से भी गर्मी बढ़ी है और पर्यावरण में बाधा पड़ी है। मौसम के उतार–चढ़ा व से लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा और बहुत ज्यादा ठंड व बहुत ज्यादा गर्मी के कारण तनाव या हाइपोथर्मिया जैसी घातक बीमारियां हो सकती हैं।

लंबे चुनाव में खर्च भी सबसे लंबा

उत्तर प्रदेश के चुनावी इतिहास में लगभग ढाई महीने तक चले सबसे लम्बे विधानसभा चुनाव में खर्चा भी लम्बा बैठा है। जिलों में चुनाव खर्च की तस्वीर उभर रही है। उससे यह लग रहा है कि पूरे चुनाव का खर्च डेढ़ अरब रूपये से ऊपर पहुंच जाएगा। यह स्थिति तब है जब कि केन्द्र ने केन्द्रीय बलों पर आने वाले खर्च का बोझ राज्य पर नहीं डाला है।

प्रदेश में चुनावों की घोषणा २१ फरवरी को हुई थी और सात चरणों में चुनाव के बाद मतगणना ११ मई को। इतना लम्बा चुनाव प्रदेश ने इसके पहले नहीं देखा था। इसलिए हर छोटी–बड़ी आवश्यकता को ध्यान में रख कर चुनाव खर्च की जो व्यवस्था है उसके अनुसार लोक सभा चुनाव का खर्च केन्द्र वहन करता है और विधान सभा चुनाव का खर्च राज्य । यदि दोनों चुनाव साथ होते हैं तो खर्च आधा–आधा बंट जाता है। इस बार सारा चुनाव लगभग ६५० कम्पनी केन्द्रीय बलों की निगरानी में हुआ। एक चरण से दूसरे चरण इन केन्द्रीय बलों के मूवमेंट, रहने, खाने आदि पर सबसे ज्यादा खर्च हुआ। इसलिए चुनाव बजट का सबसे बड़ा हिस्सा सुरक्षा के खाते में गया है। राज्य सरकार ने चुनाव के लिए सभी ७० जिलों को ४५ करोड़ अग्रिम के तौर पर जारी किए थें वाहनों पर पेट्रोल खर्च के लिए हर विस क्षेत्र को एक लाख ७५ हजार रूपये अग्रिम दिए गए। सभी क्षेत्रों में छोटे–बड़े वाहनों आदि को किराए के लिए पांच करोड़ रूपए दिए गए। हर विस क्षेत्र में स्टेशनी आदि के लिए ६० हजार रूपए तथा प्रति प्रेक्षक १० हजार रूपए दिए गए। बूथ निर्माण, बैरीकेडिंग, टेन्ट–फर्नीचर आदि का खर्च भी अग्रिम दिया गया। चुनाव कार्यों में लगे कर्मचारियों और अधिकारियों के टीए. मद में १४ करोड़ अलग जारी किए गए। पेपरों की छपाई, अमिट स्याही तथा ईवीएम को सीलबन्द

(शेष पृष्ठ ३६ पर)